राजनीतिक तरकस

RNI NO.: DELHIN/2016/70363

देश का सबसे तेज साप्ताहिक

मूल्य : ₹5

■ वर्ष : 01 ■ अंक : 05 ■ पृष्ठ : 08 ■ नई दिल्ली
■ बुधवार ■ 26 अक्टूबर , 2022 (26 अक्टूबर से 01 नवम्बर 2022)

राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार

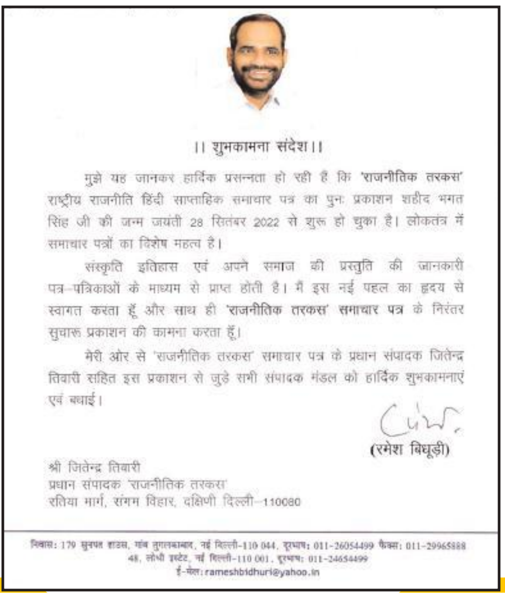

।। शुभकामना संदेश ।।

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि 'राजनीतिक तरकस' राष्ट्रीय राजनीति हिंदी साप्ताहिक समाचार पत्र का पुनः प्रकाशन शहीद भगत सिंह जी की जन्म जयंती 28 सितंबर 2022 से शुरू हो चुका है। लोकतंत्र में समाचार पत्रों का विशेष महत्व है।

संस्कृति इतिहास एवं अपने समाज की प्रस्तुति की जानकारी पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से प्राप्त होती है। मैं इस नई पहल का हृदय से स्वागत करता हूँ और साथ ही 'राजनीतिक तरकस' समाचार पत्र के निरंतर सुचारू प्रकाशन की कामना करता हूँ।

मेरी ओर से 'राजनीतिक तरकस' समाचार पत्र के प्रधान संपादक जितेन्द्र तिवारी सहित इस प्रकाशन से जुड़े सभी संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

(रमेश बिधूड़ी)

श्री जितेन्द्र तिवारी
प्रधान संपादक 'राजनीतिक तरकस'
रतिया मार्ग, संगम विहार, दक्षिणी दिल्ली–110080

निवास: 179 सुनपत हाउस, गांव तुगलकाबाद, नई दिल्ली-110 044, दूरभाष: 011-26054499 फैक्स: 011-29965888
48, लोधी इस्टेट, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष: 011-24654499
ई-मेल: rameshbidhuri@yahoo.in

कर्म योगी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

अभय तिवारी
(वरिष्ठ पत्रकार)

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते
सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।

श्रीमद्भागवत गीता के दूसरे अध्याय का यह 47 वां श्लोक निष्काम कर्म की शिक्षा देता है। गीता में यूं तो ज्ञान योग, विषाद योग, सन्यास योग, कर्मयोग जैसे कई योग का वर्णन किया गया है परंतु इसमें कर्मयोग को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। गीता के इस कर्मयोग को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने जीवन का आधार बना लिया। पिछले दो दशक से बिना रुके बिना थके प्रतिदिन 18 से 20 घंटे तक कार्य करते हैं यह किसी कर्मयोग के कठोर साधक के बस की ही बात हो सकती है।

दीपावली यूं तो हिंदुओं का एक प्रमुख धार्मिक त्योहार है लेकिन गुजराती यों के लिए यह खासा महत्व रखता है क्योंकि दीपावली से ही गुजराती नव वर्ष की शुरुआत होती है। त्योहारों के इस सीजन में हर कोई अपने परिवार के साथ रह कर के आनंद के पल व्यतीत करना चाहता है परंतु त्योहारों के इस सीजन में यदि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जीवनचर्या पर यदि नजर डालें तो वह सामान्य दिनों से अधिक व्यस्त नजर आते हैं। धनतेरस से 2 दिन पूर्व मोदी ने बुधवार को गांधीनगर के महात्मा मंदिर सम्मेलन और डिफेंस एक्सपो 2022 का उद्घाटन किया तो इसके ठीक बाद वह 'मिशन स्कूल्स ऑफ एक्सीलेंस' की शुरुआत करने पहुंच गए। जूनागढ़ राजकोट में कई कार्यक्रमों में शामिल होने के बाद गुरुवार को गुजरात के केवडीया पर्यावरण को लोगों को जागरूक करते नजर आए। भारत के सांस्कृतिक एवं धार्मिक गौरव को पुनर्स्थापित करने की ठान चुके मोदी धनतेरस के ठीक पहले छठवीं बार बाबा केदारनाथ धाम पहुंच गए। केदारनाथ धाम के चतुर्दिक विकास के लिए कई परियोजनाओं के उद्घाटन के बाद छोटी दीपावली के दिन अयोध्या में प्रभु श्री राम के चरणों में पहुंचे तो दीपावली के दिन वह एक बार फिर देश के शौर्य के प्रतीक सेना के जवानों के साथ सरहद पर नजर आए।

मोदी के विरोधी उनकी विदेश यात्राओं और उनकी कठोर जीवन शैली को लेकर के काफी तंज कसा करते हैं।परंतु उनकी विदेश यात्राएं कितनी व्यस्त और अनुशासित होती है इसके प्रत्यक्ष गवाह रहे विदेश मंत्री एस जयशंकर की जुबानी सुनिए। जयशंकर ने मोदी @20 के लोकार्पण के दौरान अपनी 5 देशों की पांच दिवसीय अफगानिस्तान, कतर, स्विट्जरलैंड, अमेरिका, मेक्सिको की यात्रा के बारे में अपना अनुभव साझा करते हुए कहा कि 5 दिनों में 3 दिन उन्होंने केवल उड़ते हुए बिताया। आराम और नींद प्लेन में पूरा किया जबकि धरती पर उतरते ही वह बैठकों में व्यस्त हो गए। इसी तरह 2 दिवसीय जापान यात्रा का उल्लेख करते हुए जयशंकर ने कहा कि 48 घंटों में से 36 घंटे हमने 23 घंटे बैठकों में बिताने के बाद सुबह सुबह जब हम सब ने कैबिनेट की बैठक में हिस्सा लिया।

प्रसिद्ध अमेरिकी लेखक जेम्स फ्रीमैन क्लार्क ने कहा था कि एक राजनीतिज्ञ अगले चुनाव की सोचता है, पर राजनेता अगली पीढ़ी के बारे में सोचता है।पिछले दो दशकों में उनकी पहचान एक कड़ी मेहनत करने वाले मुख्यमंत्री, विशाल शख्सीयत और आर्थिकी सुधारवादी वैश्विक नेता की रही है। (शेष पृष्ठ >>4 पर)

उत्सर्जन वृद्धि पर अंकुश लगाने की दिशा में भारत उठा रहा है सराहनीय कदम

कई अनुसंधान प्रतिवेदनों के माध्यम से अब यह सिद्ध किया जा चुका है कि वर्तमान में अनियमित हो रहे मानसून के पीछे जलवायु परिवर्तन का योगदान हो सकता है। वातावरण में 4 डिग्री सेल्सियस से तापमान बढ़ जाये तो भारत के तटीय किनारों के आसपास रह रहे लगभग 5.5 करोड़ लोगों के घर समुद्र में समा जाएंगे। साथ ही, चीन

कुछ ही घंटों में पूरे महीने की सीमा से भी अधिक बारिश का होना, शहरों में बाढ़ की स्थिति निर्मित होना, शहरों में भूकम्प के झटके एवं साथ में सुनामी का आना, आदि प्राकृतिक आपदाओं जैसी घटनाओं के बार-बार घटित होने के पीछे भी जलवायु परिवर्तन एक मुख्य कारण हो सकता है। एक अनुसंधान प्रतिवेदन के अनुसार, यदि के शांघाई, शांटोयु, भारत के कोलकाता, मुंबई, वियतनाम के हनोई एवं बांग्लादेश के खुलना शहरों की इतनी जमीन समुद्र में समा जाएगी कि इन शहरों की आधी आबादी पर इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा। वेनिस एवं पीसा की मीनार सहित यूनेस्को विश्व विरासत के दर्जनों स्थलों पर समुद्र के बढ़ते स्तर का विपरीत प्रभाव पड़ सकता है।

बड़ी कठिन है डगर खड़गे की

ऋतुपर्ण दवे

कॉंग्रेस ने आखिर 21 वीं सदी का पहला नया लोकतांत्रिक अध्यक्ष चुन ही लिया जो गाँधी परिवार के बाहर का है। यह जबरदस्त प्रचार और बेहद शांति के साथ आंतरिक लोकतंत्र की दुहाई के नाम पर हुआ। वह भी तब जब गाँधी परिवार का वारिस (जैसा दिखता है) 42 दिन से दिल्ली से बाहर है और पैदल-पैदल भारत जोड़ो यात्रा पूरी कर रहा है। बेशक पार्टी बेहद मुश्किल दौर में है, जनाधार तेजी से गिरा है, भविष्य क्या होगा इसको लेकर अनिश्चितता है।पार्टी में तेजी से फूट, गुटबाजी और बिखराव के बीच एक बड़ा संदेश देने की कोशिश कितनी कामयाब होगी यह वक्त बताएगा। अब कॉंग्रेस पार्टी का चुनौतियों से भरा ताज 80 बरस के मल्लिकार्जुन खड़गे के माथे पर है जिनका अनुभव भरा 55 साल का राजनीतिक सफर है। वो गाँधी परिवार के बेहद विश्वासी हैं। लेकिन यह भी जगजाहिर है कि गाँधी परिवार के बाहर के तमाम अध्यक्ष अपने अच्छे रिश्तों के चलते पार्टी अध्यक्ष तक पहुंचे जरूर लेकिन धीरे-धीरे कड़वाहट बढ़ती गई और देर-सबेर हटना या हटाना ही पड़ा। गिनाने की जरूरत नहीं सबको पता है कि के कामराज से लेकर सीताराम केसरी तक गैर नेहरू-गाँधी अध्यक्षों को कैसे-कैसे दौर से गुजरना पड़ा। बहरहाल तब और अब में फर्क तो दिखता है। हो सकता है कि परिस्थितियां इसके लिए मजबूर करें कि वैसी पुनरावृत्ति न हो।

> **“ अब कॉंग्रेस पार्टी का चुनौतियों से भरा ताज 80 बरस के मल्लिकार्जुन खड़गे के माथे पर है जिनका अनुभव भरा 55 साल का राजनीतिक सफर है। वो गाँधी परिवार के बेहद विश्वासी हैं। लेकिन यह भी जगजाहिर है कि गाँधी परिवार के बाहर के तमाम अध्यक्ष अपने अच्छे रिश्तों के चलते पार्टी अध्यक्ष तक पहुंचे जरूर लेकिन धीरे-धीरे कड़वाहट बढ़ती गई और देर-सबेर हटना या हटाना ही पड़ा। गिनाने की जरूरत नहीं सबको पता है कि के कामराज से लेकर सीताराम केसरी तक गैर नेहरू-गाँधी अध्यक्षों को कैसे-कैसे दौर से गुजरना पड़ा।**

कॉंग्रेस का इतिहास देखें तो 137 साल के सफर में छठवी बार पार्टी अध्यक्ष (शेष पृष्ठ >>2 पर)

2 राजनीतिक तरकस
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
वर्ष : 01, अंक : 05, नई दिल्ली, बुधवार, 26 अक्टूबर, 2022

एमपी के बाद यूपी में भी मेडिकल-इंजीनियरिंग हिन्दी में कराने का फैसला

अजय कुमार

मध्य प्रदेश के बाद उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने भी घोषणा की है कि वह भी अपने यहां मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई हिन्दी में कराने की तैयारी कर रहे हैं। मध्य प्रदेश की शिवराज सिंह चौहान सरकार ने मेडिकल की पढ़ाई हिन्दी में कराये जाने का साहसिक निर्णय लिया है उसका अनुसरण अन्य राज्यों में भी होना जरूरी है। फिलहाल तो मध्य प्रदेश पहला ऐसा राज्य बन गया है जहां मेडिकल की पढ़ाई हिन्दी में शुरू हो रही है। यह अच्छी बात है कि जब हमारे यहां अपनी मातृ भाषा में पढ़कर डाक्टर इंजीनियर बाहर निकलेंगे तो उनका आम जनता से जुड़ाव भी बेहतर तरीके से हो सकेगा। इसी लिए मध्य प्रदेश सरकार के फैसले का स्वागत हो रहा है। जश्न भी मनाया जा रहा है,लेकिन सवाल यह है कि यह सब तो आजादी के बाद ही हो जाना चाहिए था,इसके लिए 75 वर्षो तक यदि इंतजार करना पड़ा तो इसका जिम्मेदार कौन है। क्या यह सच नहीं है कि 1947 में हमें अंग्रेजों की गुलामी से भले ही आजादी मिल गई थी,लेकिन दो सौ वर्ष की गुलामी का असर आज भी हमारी मानसिकता और रहन-सहन पर हावी है। इसकी सबसे बड़ी कीमत हमारी मातृ भाषा हिन्दी और तमाम राज्यों की क्षेत्रीय भाषाओं को चुकानी पड़ी। निश्चित रूप से आजादी के पश्चात हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए हमारे सिस्टम और उस दौर की सरकारों को भूमिका भी अच्छी नहीं रही होगी,नहीं तो हालात ऐसे नहीं होते। अपने ही देश में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए जब हिन्दी पखवाड़ा मनाना पड़े तो समझा जा सकता है कि हिन्दी के प्रति हमारी कैसी उदासीनता रही होगी।

हिन्दुस्तान में अंग्रेजी योंही नहीं फलीफूली। अपने देश में आम धारणा है कि देश पर शासन करने के लिए, या फिर रोजी-रोजगार और समाज में आगे बढ़ने के लिए अंग्रेजी मील का पत्थर साबित होती है,जिसका आना जरूरी हैं। यह सोच सरकार में बैठे हुक्मरानों ने बनाई तो अन्य लोग इसके पीछे चल पड़े। आज भी भारत में अंग्रेजी बोलने-जानने वालों को आसानी से नौकरी मिल जाती है। उनका वेतन भी अन्य भाषा भाषियों से अधिक होता है। अंग्रेजी में धाराप्रवाह होने से पुरुषों के वेतन में 34 प्रतिशत और महिलाओं के वेतन में 22 फीसदी तक की बढ़ोतरी हो जाती है। लेकिन ये प्रभाव अलग-अलग होते हैं।अधिक आयु वाले और अधिक शिक्षित श्रमिकों के लिए प्रतिफल(फायदा) अधिक हैं और कम शिक्षित तथा कम आयु के श्रमिकों के लिए ये प्रतिफल कम हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि अंग्रेजी कौशल और शिक्षा के बीच समय के साथ मजबूत हुई है।

> अंग्रेजी के वर्चस्व के बीच मध्य प्रदेश के बाद उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी ऐलान किया है कि उनके यहां भी मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई हिंदी में करवाई जाएगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ऐलान किया कि उत्तर प्रदेश में कुछ मेडिकल और इंजीनियरिंग की किताबों का हिंदी में अनुवाद किया गया है। आने वाले एकेडमिक ईयर से इन प्रोग्राम्स के सब्जेक्ट को यूनिवर्सिटी और कॉलेजों में उपलब्ध कराया जाएगा, ताकि इन्हें हिंदी में भी पढ़ा जा सके।

गौरतलब हो भारत एक बहुभाषी देश है जहां हजारों भाषाएं हैं। इनमें से 122 भाषाओं के मूल भाषी 10,000 से अधिक हैं (2001 की जनगणना के अनुसार) और बोलने वालों की संख्या के हिसाब से भारत में भाषाओं की सूची में अंग्रेजी 44वें स्थान पर है। एक सर्वे के अनुसार अपने देश में पांच में से एक भारतीय वयस्क अंग्रेजी बोल सकता है। चार प्रतिशत अंग्रेजी में धाराप्रवाह बोल सकते हैं और अतिरिक्त 16 फीसदी अंग्रेजी में थोड़ी-बहुत बातचीत कर सकते हैं। अंग्रेजी बोलने की क्षमता पुरुषों में अधिक होती है। 26 प्रतिशत पुरुष थोड़ी-बहुत अंग्रेजी बोल सकते हैं जबकि महिलाओं में यह आकड़ा 14 फीसदी है। तथाकथित उच्च जातियों, शहरी निवासियों, युवा और बेहतर शिक्षित आबादी से संबंधित लोगों के लिए भी यही सच है। ऐसे व्यक्ति जिनके पास कम से कम स्नातक की डिग्री है, उनमें से लगभग 89 प्रतिशत लोग अंग्रेजी बोल सकते हैं जबकि जिन्होंने 5-9 साल की स्कूली शिक्षा पूरी की है, उनमें से केवल 11 परसेंट लोग ही अंग्रेजी बोल सकते हैं। उन लोगों के लिए यह प्रतिशत लगभग शून्य है, जिनकी स्कूली शिक्षा चार साल से कम है। इसका कारण यह है कि भारत के कई सार्वजनिक विद्यालय केंद्र सरकार द्वारा सुझाए गए त्रिभाषा सूत्र का पालन करते हैं, जिसके अनुसार आम तौर पर अंग्रेजी भाषा का शिक्षण मिडिल स्कूल स्तर पर आरंभ होता है।

चूंकि देश पूर्व में एक ब्रिटिश उपनिवेश था, इसलिए अंग्रेजी संघ सरकार की एक राजभाषा और इसके द्वारा संचालित शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षा का माध्यम बनी हुई है।

पृष्ठ 1 का शेष

बड़ी कठिन है डगर खड़गे की

का चुनाव हुआ है। बांकी वक्त पार्टी की कमान नेहरू-गांधी परिवार के हाथों में या फिर सर्वसम्मत चुने अध्यक्ष के पास रही। इस बार भी पहले की तरह गाँधी परिवार ने साफ कर दिया था कि वो इस दौड़ में नहीं है। उसके बाद जिस तेजी से अशोक गहलोत का नाम उभरा और मुख्यमंत्री की कुर्सी के मोह में पिछड़ा तब से मल्लिकार्जुन खड़गे बहुत तेजी से सामने आए और शशि थरूर उनके प्रतिद्वन्दी बने। जीत गाँधी परिवार के वरदहस्त प्राप्त मल्लिकार्जुन खड़गे को मिली। जीतते ही उन्होंने सोनिया गाँधी से मिलने का वक्त मांगा। हुआ उल्टा शाम को बधाई देने खुद सोनिया गाँधी उनके घर पहुंची और बड़ा संदेश दे डाला। इससे पहले थरूर ने पहले उम्र में चुनाव में धांधली का आरोप लगाया बाद में खुद ही बड़ा दिल दिखाते हुए खड़गे को मुबारकबाद देने उनके घर जा पहुँचे। निश्चित रूप से यह पार्टी के लिहाज से सकारात्मक कहा जाएगा लेकिन सवाल फिर वही कि खड़गे का नेतृत्व कॉंग्रेस को कितना आगे ले जाएगा?

थोड़ा अतीत में भी झांकना होगा। 1964 से 1967 तक के दौर में कॉंग्रेस दिग्गजों को सरकार से इस्तीफा दिलाकर संगठन में ला पार्टी को मजबूत करने वाला 'कामराज प्लान' अपने आप में अलग था। इसकी शुरुआत 1963 में खुद से ही की जब कामराज ने तमिलनाडु के मुख्यमंत्री के पद से स्तीफा देकर उदाहरण पेश किया। इसी कारण और कई राज्यों में मुख्यमंत्रियों और केंद्रीय मंत्री भी इस्तीफे को विवश हुए। नेहरू जी की मृत्यु के बाद इन्हीं ने इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री बनाने में बड़ी राजनीतिक बिसातें बिछाईं और कामियाब भी हुए। लेकिन एकाएक कई मतभेदों के चलते दोनों के रिश्ते बिगड़ते चले गए। इसी चलते 1969 में कॉंग्रेस दो टुकड़े हो गई। सिंडिकेट के नियंत्रण वाला धड़ा कांग्रेस (ओ) हो गया और इंदिरा के नेतृत्व वाला धड़ा कांग्रेस (आर) बन गया जो मौजूदा कांग्रेस है। दो साल बाद 1971 में लोकसभा चुनाव के साथ-साथ तमिलनाडु विधानसभा चुनाव भी हुए। इसमें कामराज अपने गुट की तरफ से मुख्यमंत्री के दावेदार थे। इधर इंदिरा गांधी ने भी जबरदस्त चाल चली उन्होंने द्रविण मुन्त्र कड़गम (डीएमके) के एम करुणानिधि के साथ मिलकर खेला कर दिया। इन्दिरा कांग्रेस ने डीएमके से गठबंधन कर लिया और विधानसभा चुनाव में ही नहीं उतरी। उल्टा लोकसभा चुनाव खातिर डीएमके से सीटों का समझौता कर लिया और कामराज का मुख्यमंत्री बनने का सपना चूर-चूर कर दिया। इसी के बाद तमिलनाडु में ऐसे हालात बनते गए कि कॉंग्रेस खुद हासिए पर चली गई।

1991 में राजीव गांधी की हत्या के बाद के हालात भी देखने होंगे। हत्या पहले चरण के बाद हुई जिसके नतीजे कांग्रेस के लिए अच्छे नहीं थे। लेकिन बाद के चरण में सहानुभूति के चलते 232 सीटें जीतकर कॉंग्रेस बड़ा दल बनी फिर भी बहुमत से पीछे रह गई। उसी समय सोनिया गाँधी को आगे आने के लिए खूब जोर आजमाइश हुई। लेकिन वो तैयार नहीं हुईं। आखिर में नरसिम्हा राव के नाम पर मुहर लगी जिन्होंने पूरे 5 साल गठबन्धन की सरकार चलाई और पार्टी भी संभाली। बतौर पार्टी अध्यक्ष अपनी मनमर्जी से संगठन चलाने और प्रधानमंत्री के रूप में देश चलाने से उनके गाँधी परिवार से रिश्ते बिगड़ने लगे। नरसिम्हा राव ने डूबती अर्थव्यवस्था को उदारीकरण के जरिए बचाया था। 1996 में भ्रष्टाचार के मामले में उन्हें कॉंग्रेस अध्यक्ष पद छोड़ना पड़ा। सीताराम केसरी को भी गाँधी परिवार ने बड़े जोश-खरोश से अध्यक्ष बनाया था लेकिन संबंध ज्यादा दिनों तक नहीं निभे। कई नेताओं और सलाहकारों के द्वारा लगातार कान भरे जाने से हमेशा गाँधी परिवार के विश्वासी और भक्त माने जाने वाले केसरी भी आँखों की किरकिरी बन गए। अंततः 5 मई 1998 को अपनी ही बुलाई कॉंग्रेस वर्किंग कमिटी की बैठक में उन्हें पार्टी की बदहाली का हवाला दिया गया और सोनिया गाँधी को अध्यक्ष बनाने की सिफारिश को कहा गया। केसरी ने इसे क्या ठुकराया उन्हें भी जबरदस्त अपमान का सामना झेलना पड़ा। वो बीच बैठक से चले गए और प्रणव मुखर्जी ने वरिष्ठता के नाते आगे अध्यक्षता की जिसमें दो प्रस्ताव पास हुए। एक में सीताराम केसरी को उनके कार्यकाल के लिए आभार जताया तो दूसरे में सोनिया गाँधी से अध्यक्ष पद स्वीकारने की अपील की गई। साल भर बाद एक बैठक में पहुंचने पर केसरी के कुर्ता फाड़ने व अपमानित करने की बातें सबने देखीं।

नए कॉंग्रेस अध्यक्ष 6 भाषाओं के जानकार हैं। मूलतः दक्षिण भारत से होकर भी हिन्दी भाषा में जबरदस्त दखल रखते हैं। कांग्रेस अध्यक्ष बनने वाले दूसरे महादलित नेता हैं। 1971 में बाबू जगजीवन राम पहले अध्यक्ष बने थे। दो बार सांसद और 9 बार लगातार विधायक रहने वाले खड़गे ने 2009 गुलबर्गा लोकसभा चुनाव जीत लगातार दसवीं जीत हासिल की। 2014 में मोदी लहर के बावजूद वो गुलबर्गा लोकसभा चुनाव जीते। लेकिन 2019 में मोदी की सुनामी के आगे वो गुलबर्गा लोकसभा चुनाव हार गए। 12 चुनाव लड़ने के दौरान यह उनकी पहली हार थी।

अब देखना होगा कि इस दौर में जब मीडिया और सोशल मीडिया बेहद सशक्त है, मल्लिकार्जुन खड़गे कॉंग्रेस को कहां तक ले जा पाते हैं। आज भी कुछ को छोड़ तमाम कॉंग्रेसी दिग्गज बड़ी बहसों, जनसंवादों में नदारत दिखते हैं। अखबारों में लेख लिख जान फूंकने की कोशिशें तो दूर, टीवी के फ्रेम में आने से भी डरते हैं। लेकिन खुद को सत्ता से बाहर हुआ मानने को तैयार नहीं! व्यव्हार, आचरण में वही खनक वही रौब। जिनकी वार्ड चुनाव जीतने की औकात नहीं वो बड़े पदाधिकारियों की चाटुकारिता कर, विज्ञप्तिवीर बन संगठन में बरसों से काबिज हैं। क्या ऐसे चाटुकारों का भी हिसाब-किताब किया जाएगा? चंद हफ्तों बाद होने वाले हिमांचल और गुजरात चुनाव में कॉंग्रेस की स्थिति किससे छिपी है।

हां, एक सबसे बड़ा सवाल उभर रहा है कि राहुल गाँधी की भारत जोड़ो यात्रा का 12 राज्यों से होकर 3570 किलोमीटर लंबा सफर मुकर्रर है। जिसमें खड़गे के अध्यक्ष बनने तक वो 1250 किलोमीटर तय कर चुके हैं। बेशक इससे कॉंग्रेस की स्थिति मजबूत होगी और उमड़ते जनसैलाब के संकेत सुकून भरे हैं। वहीं खड़गे को लेकर राहुल का बयान कि उनकी भूमिका नए अध्यक्ष तय करेंगे और वो खड़गे जी को रिपोर्ट करेंगे के कई मायने हो सकते हैं। जब यात्रा शुरू की थी तब सोनिया गाँधी अंतरिम अध्यक्ष थीं जब तक यात्रा का लगभग 35 प्रतिशत हिस्सा तय किया तो मल्लिकार्जुन अध्यक्ष हो गए। एक सवाल स्वाभाविक है जो सबके मन में है कि पार्टी में अव्वल कौन दिखेगा राहुल, खड़गे या सोनिया? लोकतंत्र की मजबूती की खातिर सशक्त विरोधी दल देश के लिए जरूरी है। अच्छा होता इस बार कॉंग्रेस आपसी विरोध न दिखा विरोधियों को अपनी ताकत दिखाती। कुछ भी हो लोगों में इसको लेकर उत्सुकता और वक्त का इंतजार है कि हैसियत में कौन ताकतवर होगा 10 राजाजी मार्ग (खड़गे निवास) या 10 जनपथ (सोनिया निवास)?

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तंभकार हैं।)

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक जितेंद्र तिवारी द्वारा इंप्रेशन प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18/19/20, सी ब्लॉक, सेक्टर 59, नोएडा, उ.प्र.-201301 से मुद्रित तथा ई632/7 सी संगम विहार साउथ दिल्ली -110080 से प्रकाशित। प्रकाशित लेखों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा। प्रधान संपादक : जितेंद्र तिवारी प्रबंध संपादक : राजेश तिवारी
RNI NO.: DELHIN/2016/70363 Email:tarkasnews@gmail.com Mob:9990170069 Website: www.rajneetiktarkas.in

वर्ष : 01, अंक : 05, नई दिल्ली, बुधवार, 26 अक्टूबर, 2022

भारतीय लोक एवं जनजातीय कलाओं की समृद्ध विरासत

डॉ गौरी श्रीवास्तव

जब उन्होंने 2001 में गुजरात की कमान अपने हाथ में ली तो उस समय राज्य विनाशकारी भूकंप की त्रासदी को झेल रहा था। इसके बाद 2002 की हिंसा के कारण प्रदेश और आर्थिक संकट में आ गया था। राज्य को पुनर्जीवित करने के लिए उन्होंने निवेश को आकर्षित करने और निवेशकों का विश्वास बनाने के लिए 2003 में एक राज्य स्तरीय सम्मेलन-वाइब्रेंट गुजरात, ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट का आयोजन किया। उनके प्रयासों का परिणाम यह हुआ कि 2004-05 से 2011-12 के दौरान गुजरात ने दो अंकों की शानदार वृद्धि दर दर्ज की। आज गुजरात देश के उच्च विकास दर वाले राज्यों और अग्रणी औद्योगिक राज्यों में से एक है। अपने इसी गुजरात माडल की बदौलत मोदी सत्ता के शिखर पर पहुंच गए। सत्ता में पहुंचने के बाद वह कभी भी अपने चुनावी वादों से कभी मुकरे नहीं बल्कि धारा 370, सांस्कृतिक

राष्ट्रवाद जैसे लंबित एवम अनकहे वादों को भी पूरा कर दिया जिसके पूरा होने उम्मीद उनके समर्थकों ने छोड़ दी थी।मोदी की नीतियों में भले ही खामिया, कमियां हो सकती है परंतु उनकी उनकी नीयत को लेकर जनता को कभी किसी भी प्रकार का कोई शक सुबहा नहीं है। यही इस कर्मयोगी की कमाई हुई जाती है जिसके भरोसे वह सत्ता के शिखर पर बने हुए हैं।

भारतीय लोक एवं जनजातीय कलायें अपने सौंदर्य और लावण्य से सबका ध्यान आकर्षित करती आयी है। साधारण, सरल, ईमानदार, जीवंत और रंगों से भरपूर हैं यह ज़मीन से जुड़ी हुयी कलाएं। इनके ना तो कोई मापदंड हैं और ना ही इनको बनाने के दृढ नियम हैं। भारतीय लोक कलाओं की अनूठी छाप, ना केवल उसके संगीत, नाट्य, नृत्य में ही नहीं बल्कि उसके निवासियों के द्वारा निर्मित चित्रों, भित्ति चित्रों, मिटटी और धातु के बर्तनों, आभूषणों , खिलौनों इत्यादि में प्रत्यक्ष दिखाई देती है। इन कलाओं को बनाने वाले लोग इनको पीढ़ी दर पीढ़ी परम्परा के रूप में जीवित रखते आये हैं। यह कलायें इतनी समृद्ध इसलिये हैं क्योंकि भारत विविधताओं का देश है, इसके विस्तृत पटल पर जगह जगह विभिन्न भगौलिक परिस्थितियाँ हैं तथा उनमे अनेकता के कारण ही ऐसा सम्भव हो पाया है ।

अभी हाल ही में रिलीज़ हुयी फिल्म 'कान्तारा' की अपार सफलता ने यह साबित कर दिया है कि ज़मीन से जुड़ी हुयी चीज़ें ही लोगों के दिल को छू पाती हैं। लोग चाहे देसी हों या विदेशी सब ऐसी ही चीज़ों से अपने को जोड़ कर देख पाते हैं। यह हमारे समाज का हमारी संस्कृति का सही मायनो में प्रतिनिधित्व करती हैं। यह हमारा दायित्व बनता है कि ऐसी कलाओं को प्रोत्साहन दें ताकि यह देश तथा दुनिया में अपनी उचित जगह बना सकें। इन परम्पराओं को जीवित रखने में हमारे पूर्वजों ने हज़ारों साल लगा दिये हैं,,विदेशी आक्रमणों को सह कर भी इनको जीवित रखा है। अब इनको आगे बढ़ाना हमारी ज़िम्मेदारी है। आज कई लोक कलायें मृतप्राय होने की कगार पर हैं जिनके पुरस्थापन के प्रयास तो हो रहे हैं पर यह जन समर्थन के बिना सम्भव नहीं है। मृत कलाओं के पुनर्स्थापन के लिये सरकारें अपार धनराशि म्यूजियम को देती हैं परन्तु यदि लोगों में इनको पुनर्स्थापित करने का प्रयास हो तो वह सही दिशा में उठाया हुआ कदम होगा।

मोदी के अयोध्या दौरे से और प्रखर होगा हिन्दुत्व

अजय कुमार

प्रभु राम की नगरी अयोध्या एक बार फिर सुर्खियों में है, भले ही इसकी वजह प्रभु श्रीराम नहीं, देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ही क्यों न हों। अयोध्या भगवामय हो गई है। प्रधानमंत्री का जब से अयोध्या में दीपोत्सव का कार्यक्रम बना है तब से अयोध्या में सियासी हलचल बढ़ गई है। इस बार रामलला के दर्शन के साथ पीएम राममंदिर निर्माण को देखने भी जाएंगे। वे सरयू नदी का दर्शन.पूजन कर सरयू की आरती भी करेंगे। दीपोत्सव स्थल पर भी उनका कार्यक्रम प्रस्तावित है। इस दौरान पीएम मोदी अयोध्या रामं मंदिर निर्माण के साथ ही अयोध्या को लेकर अपना व्यापक संकल्प करीब 15 मिनट के भाषण में व्यक्त कर सकते हैं।

अयोध्या स्थित प्रमुख वैष्णव पीठ श्रीरामवल्लभाकुंज के प्रमख और नित्य सरयू महाआरती के संरक्षक स्वामी राजकुमार दास कहते हैं कि पीएम मोदी न केवल परम भक्त बल्कि वैश्विक सोच वाले हैं। उनकी सेवा अयोध्या को भव्य से भव्यतम बनाने की है। सीएम योगी भी उनकी इस सोच में हर पल तत्पर दिखाई देते हैं। मोदी के कार्यक्रम को देखते हुए दीपोत्सव पर अयोध्या को भगवामय किया जा रहा है। यहां के सांसद लल्लू सिंह के आवास पर हजारों भगवा ध्वज का निर्माण किया जा रहा है। ध्वज पर अंकित राम दरबार का चित्र त्रेतायुग में भगवान राम के आगमन के दृश्य का साक्षात दर्शन करा रहे हैं। मुख्यमंत्री योगा आदित्यनाथ से लेकर तमाम मंत्री और यूपी सरकार के कई बड़े.बड़े अधिकारी यहां पैदल गलियों में घूमते दिख रहे हैं।

अक्सर सीमा पर वीर जवानों के साथ दीपावली या अन्य उत्सव मनाने वाले मोदी ने जैसे ही अयोध्या

बीजेपी की मंशा यही है कि 2024 के आम चुनाव के पहले अयोध्या में मंदिर निर्माण का कार्य पूरा हो जाए, ताकि इसे बड़ा चुनावी मुद्दा बनाया जा सके। बीजेपी आलाकमान द्वारा 2024 के आम चुनाव में अयोध्या के साथ-साथ काशी और मथुरा को भी हवा दी जा रही है।

में दीपोत्सव का कार्यक्रम तय कियाए कुछ लोगों को उनकी (मोदी) राम लला के प्रति इस आस्था में 2024 का राजनैतिक एजेंडा नजर आने लगा। हिंदुत्व की पिच पर खुलकर बैटिंग करने वाले मोदी और योगी अयोध्या आएंगे तो यह बात तय है कि हिंदुत्व और प्रखर होगा। इसी बेचैनी ने मोदी विरोधियों की नींद उड़ा रखी है। यह वह ताकते हैं जो हमेशा से हिंदुओं में बिखराव और अन्य कौमों में एकजुटता का सपना पाले रहती हैं। ताकि राजनैतिक क्षितिज पर उनकी सियासत का सितारा हमेशा चमकता रहे। इसमें बसपा, सपा, वाममंथी और कांग्रेस सहित तमाम दल शामिल हैं। इन्हीं दलों के नेता सवाल पूछ रहे हैं कि आज अयोध्या मोदीमय है, लेकिन मंदिर आंदोलन के समय तो मोदी कहीं नहीं दिखाई देते थे, मंदिर निर्माण के लिए संघर्ष करने वाले नेताओं पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वापजेयी, पूर्व डिप्टी पीएम लाल कृष्ण आडवाणी, डा. मुरली मनोहर जोशी, उमा भारती के संघर्ष की गाथा अयोध्या में क्यों नही दिखाई सुनाई पड़ती है। हिन्दू हृदय सम्राट पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह की भी अनदेखी नहीं की जा सकती है, जिनके सत्ता में रहते विवादित ढांचा ध्वस्त हुआ था। विश्व हिन्दू परिषद के अशोक सिंघल को कौन भूल सकता है जिन्होंने पूरा जीवन राम मंदिर निर्माण के लिए कुरबान कर दिया। इसी तरह से मंदिर आंदोलन के सबसे बड़े पैरोकार दिवंगत रामचन्द्र दास परमहंस, देवराह बाबा, मोरोपंत पिगंले, महंत अवैद्यनाथ, गोपाल सिंह विशारद, कोठारी बंधु न जाने कितने अनगिनत नाम और चेहरे हैं, जबकि बीजेपी सांसद लल्लू सिंह कहते हैं कि सप्तपुरियों में प्रथम नगरी अयोध्या मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की जन्मभूमि है। रामराज्य की परिकल्पना यहां से वैश्विक स्तर पर प्रसारित हुई है। आदर्श शासन स्थापित करने की प्रेरणा हमें रामराज्य के बारें अध्ययन प्रदान करता है। दीपोत्सव के माध्यम से यहां की संस्कृति में समाहित आदर्शए मयार्दा व अनुशासन से पूरे विश्व को अवगत कराने का कार्य यूपी सरकार ने किया है तो इससे किसी को दुखी या परेशान नहीं होना चाहिए। सांसद लल्लू सिंह मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के बयान को याद दिलाते हुए कहते हैं कि योगी ने तो कहा ही है कि रामनगरी अयोध्या विश्व के मानचित्र पर स्थापित हो रही है ।उनके प्रयासों और प्राथमिकताओं में अयोध्या के विकास की झलक साफ दिखाई देती है। अयोध्या को लेकर सीएम योगी की महत्वाकांक्षी योजना है। यही कारण है कि कुछ समय पूर्व यहां लता मंगेशकर चौराहे का उद्घाटन करते समय सीएम योगी ने यह घोषणा की थी कि अयोध्या में राम मंदिर आंदोलन से जुड़े तथा वरिष्ठ साधु-संतों के नाम से आने वाले एक साल के अंदर लता मंगेशकर चौराहे की तर्ज पर चौराहा बनाया जाएगा।

बहरहालएवैसे भी राम की नगरी अयोध्या पर केंद्र और प्रदेश सरकार का खास फोकस रहता है। बीजेपी के प्रत्येक चुनाव में अयोध्या से लेकर मथुरा.काशी तक छाया रहता है। यही कारण है कि कई विकास योजनाएं एक साथ अयोध्या में तीव्र गति के साथ चलाई जा रही हैं। अयोध्या का विजन डॉक्यूमेंट 2047 तैयार होने के बाद राम नगरी में लगभग 20 हजार करोड़ की योजनाओं पर काम शुरू हो गया हैण इस वक्त राम मंदिर के अलाचा पांच ऐसे प्रोजेक्ट पर काम चल रहा है, जो कि आने वाले समय में अयोध्या की तस्वीर बदल देंगेणएक तरफ जहां प्रभु श्रीराम का भव्य और दिव्य मंदिर दिसंबर 2023 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया हैए तो वहीं दूसरी तरफ जनवरी 2024 तक भगवान श्रीराम अपने गर्भ गृह में विराजमान हो जाएंगे। इसके साथ ही साथ अयोध्या को विश्व के मानचित्र पर पर्यटन की नगरी में भी विख्यात करने को लेकर कई योजनाएं चलाई जा रही हैं। राम नगरी में श्रद्धालुओं को किसी तरह की कोई असुविधा ना हो इसको लेकर 4 पथ का निर्माण किया जा रहा है। सुग्रीव किला से राम जन्मभूमि तक लगभग 600 मीटर लंबा पथ निर्माण किया जा रहा है, जिसका निर्माण जनवरी 2022 से शुरू हुआ है और दिसंबर तक इसको पूरा करने का प्रयास किया जा रहा है। करीब 39 करोड़ रुपए की इस योजना पर कार्य लगातार प्रगति पर है। इसके अलावा सहादतगंज से लेकर राम पैड़ी तक लगभग 13 किलोमीटर राम पथ का निर्माण किया जाएगा, जिसमें लगभग 797 करोड़ों रुपए की लागत आएगी।

इसके साथ ही भक्ति पथ जो सिंगार हाद से राम जन्मभूमि तक कि लगभग 800 मीटर लंबी सड़क होगी, जिसकी लागत लगभग 62 करोड़ रुपए है। धर्म पथ 2 किलोमीटर का होगा। यह राष्ट्रीय राजमार्ग से नया घाट यानी लता मंगेशकर चौक तक बनाया जाएगा। ऐसा भी कहा जा रही है कि यह दुनिया की सबसे हाईटेक सड़कों में से एक होगी। अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन का काम लगभग 90 फीसदी पूरा कर लिया गया है।

भगवान राम की मंदिर नुमा अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन को बनाया जा रहा है, जिससे अयोध्या आने वाले पर्यटक या श्रद्धालु अयोध्या पहुंचते ही उनको इस बात का आभास हो कि वह धर्म नगरी अयोध्या में हैं। दिसंबर 23 तक अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन यात्रियों के लिए खोल दिया जाएगा। धर्म नगरी अयोध्या में बनने वाला एयरपोर्ट श्रीराम एयरपोर्ट के नाम से जाना जाएगा। इसका निर्माण भी राम मंदिर के मॉडल पर किया जा रहा है। धर्म नगरी अयोध्या में बनने वाला एयरपोर्ट श्रीराम एयरपोर्ट के नाम से जाना जाएगा। इसका निर्माण भी राम मंदिर के मॉडल पर किया जा रहा है। बीजेपी की मंशा यही है कि 2024 के आम चुनाव के पहले अयोध्या में मंदिर निर्माण का कार्य पूरा हो जाए, ताकि इसे बड़ा चुनावी मुद्दा बनाया जा सके। बीजेपी आलाकमान द्वारा 2024 के आम चुनाव में अयोध्या के साथ-साथ काशी और मथुरा को भी हवा दी जा रही है।

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
वर्ष : 01 , अंक : 05, नई दिल्ली, बुधवार, 26 अक्टूबर, 2022

पर्व-विशेष

दीप मालाओं का महामहोत्सव है दिवाली : पर्व एक, किदवंती कथाएं अनेक

विनोद कुमार सिंह

दीपावली का पर्व कार्तिक मास के कृष्ण त्रयोदशी (धनतेरस) से कार्तिक मास के शुक्ल द्वितीया (भाईदूज)तक मनाया जाने वाला पंच दिवसीय -महोत्सव पर्व है। कार्तिक मास की अमावस्या 'दीपावली 'भारतीय सभ्यता ,संस्कृति की अस्मिता की पहचान है।इन 5 दिनों में सर्वप्रथम त्रयोदशी को धनतेरस के दिन भगवान धनंवतरी का पूजन होता है ,दूसरे दिन मृत्यु के देवता यमराज के निर्मित नरक चतुर्दशी (रूप चौदस) मनाई जाती है।जिसे छोटी दीपावली भी कहते है। छोटी दिवाली की सुबह हल्दी, सरसों तेल ,आटे और बेसन के उबटन से नहाकर नये वस्त्र पहनकर दिया जलाते है। तीसरे दिन दीपावली ,कार्तिक कृष्ण पक्ष की अमावस्या की काली अँधेरे रात में दीप जलाकर रौशनी की जाती है।इस दिन श्री लक्ष्मी जी के पूजन का विशेष विधान है।आज मै आप को दिवाली के संदर्भ में धार्मिक ग्रंथो व लोक कथाओं के विषय पर प्रकाश डालते है इनमें से एक ब्रह्म पुराण के अनुसार आज के दिन अर्धरात्रि के समय घन की देवी महालक्ष्मीजी के भुलोक में यत्र -तत्र विचरण करती हैं। इसलिए नगर वासी इस दिन घर -बाहर को खूब साफ -सुथरा करके,आम के पत्तों ,केले का खम्ब और फूलों और रंगोली से सजाया -संवारा जाता हैं। ताकि जब लक्ष्मीजी आये वह प्रसन्न होकर स्थायी रूप से अपने भक्तों के घर निवास करती हैं। चौथे दिन गोवर्धन पूजा तथा पांचवें दिन द्वितीया को भाईदूज ,जिन्हें विभिन्न वर्गों के लोग बड़ी श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं।

वास्तव में दीप मालाओं का महापर्व धनतेरस ,नरक चतुर्दशी तथा महालक्ष्मी पूजन -इन तीनों पर्वों का मिश्रण हैं।

हिन्दू धर्म की मान्यताओं के आधार पर दीपावली मनाने के पीछे काफी मान्यताएं प्रचलित हैं। जिनमे एक मान्यता के यह है कि बाल्मीकि रामायण वर्णित है कि जब मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम 14 वर्ष का वनवास पूरा करके तथा आसुरी वृत्तियों के प्रतीक रावणादि का संहार करके अयोध्या में पधारे थे,तब अयोध्यावासियों ने उनके स्वागत की खुशी में और राम के राज्याभिषेक पर दीपमालाएं जलाकर महोत्सव 'दीपावली पर्व 'मनाया था।

वामन पुराण के अनुसार विष्णु भगवान ने वामन अवतार के रूप में दैत्यों के राजा बलि से 3 पग भूमि मांगी थी तो दो पगों में समस्त पृथ्वी और आकाश नाप लिया तथा तीसरे पग को राजा बलि के सिर पर रखकर उसे पाताल भेज दिया।स्वर्ग मिलने के कारण प्रतिवर्ष यह पर्व आश्विन वदी दादश को मनाया जाता है।

द्वापर युग के अनुसार राजा नरकासुर ने अहंकार ,मद वश इन्द्र का घोडा चुरा लिया तथा 16000 कन्याओं को बन्दी बना लिया तब योगीराज श्रीकृष्ण ने उसका वध करके उन कन्याओं का उद्धार किया।वह दिन चतुर्दशी का था।बकासुर -वध केआनन्दोत्सव के रूप में भी दीपावली ब्रजवासियों ने मनायीं। दीपावली के एक पहले दिन धनत्रयोदशी (धनतेरस)को सभी वर्ग अपने बजट के हिसाब से चाँदी,पीतल ,काँसे के बर्तन खरीदते हैं।रात्रि को यमदीप (जमदिया)जलाकर घर के मुख्य द्वार पर यम की पूजा करके रखा जाता है।

आज के दिन ही उज्जैन सम्राट विक्रमादित्य का राजतिलक भी हुआ था यानी विक्रमी संवत का आरंभ भी इसी दिन से माना जाता है।अतः यह नए वर्ष का प्रथम दिन भी है।आज दिन व्यापारी गण अपने बही -खाते बदलते हैं तथा अपने वर्ष भर के लाभ -हानि का ब्यौरा तैयार करते हैं इस दिन घूरे को भी पूजा जाता है !—समूचे विश्व में भारतीय सभ्यता व संस्कृति में ही यह अनूठी परम्परा है कि घूरे(कूड़ा दान रखने की जगह) के प्रति भी यहां सम्मान व्यक्त किया जाता है। समूचे वर्ष में एक शाम उसके नाम भी होती है।जिस घूरे ने वर्षभर हमारे घरों को साफ-सुथरा रखने के लिए अपने ऊपर टनों कूड़ा-कचरा फिंकवाया हों ,वहीं दीपावली के दिन महालक्ष्मी के आगमन का मार्ग प्रशस्त करता है और स्वयं लोग उसी घूरे को अपने हाथों से साफ कर लक्ष्मी जी के आने की प्रतीक्षा में उनके लिए इतनी साफ-सफाई व शुद्धता दर्शाते हैं।

कहावत भी है कि 'एक दिन घूरे के दिन भी फिरते हैं 'और इस घूरे के दिन छोटी दीपावली के ही रोज फिरते हैं।जिस घूरे पर रोज घर का ढेरों कूड़ा-करकट फेंका जाता है ,वहां दीपावली की शाम को घर की गृहणियां तेल का दीपक जलाती हैं।'कौड़ी' धन -लक्ष्मी का प्रतीक माना गया है – इसके साथ ही घूरे को प्रसाद के रूप में कौड़ी चढ़ाने की परम्परा है।यम दिवस के भी दिन जम दीया(यम दीपक)में कौड़ी डालकर घर के बाहर जलाने का रिवाज है,तेल शेष हो जाने पर दीपक तो बाहर छोड़ देते है पर कौड़ी उठाकर गल्ले या तिजोरी में रख देते हैं। कहते है कि ऐसा करने से धन-समृद्धि में बरकत होती है और मृत्यु के देवता हमारे स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं।

घूरे पर चढ़ाई जाने वाली कौड़ी धन-लक्ष्मी की प्रतीक मानी जाती है।यूं भी कौड़ी ने अपने रंग-रूप ,आकार व चमक -दमक से अपनी अलग ही पहचान बना रखी है।कौड़ियों से मनुष्य का बहुत प्राचीन रिश्ता रहा है। प्राचीन समय में लेन-देन भी कौड़ियों के जरिये होता था,तब कोई रुपया व सिक्का नहीं था। बल्कि मोल-भाव में

कौड़ियां ही गिन कर दी जाती थीं। कौड़ी का उपयोग आज भी विभिन्न समुदायों के लोगों में भिन्न-भिन्न प्रकार से होता रहता हैं। भारतीय संस्कृति में रचे-बसे -तीज त्यौहार ,शादी-ब्याह ,जन्म-मरण ,साज -श्रृंगार व जादू-टोने में भी कौड़ी की पूछ -परख बरकरार है। बंगालियों में लक्ष्मीपूजन के अवसर पर श्रद्धालु अलग टोकरी सजाते हैं,उसे ढकने के लिए जिस कपड़े का उपयोग करते हैं वह पूरा कौड़ियों से मढ़ा होता हैं। कौड़ियां आदिमुद्रा हैं,हालांकि उनसे पहले मिट्टी के पक्के हुए ठीकरे चलते थे,लेकिन उनमें ठोस स्थावित्व न होने की वजह से उसका प्रचलन बंद हो गया। कौड़ियों के रूप में हीं सभ्यता का स्थायी मुद्रा से प्रथम परिचय हुआ था। मुद्रा के रूप में कौड़ियों का इस्तेमाल सबसे पहले भारत में हुआ था।इसके बाद ही एशियाई ,अफ्रीकी,यूरोपीय व अमरीकी देशों में भी कौड़ियों का प्रचलन शुरू हो गया।नवीं शताब्दी में भारतीय व्यापारी तो कौड़ियों के बूते पर सोना तक खरीदते थें।विश्व की सबसे महंगी कौड़ी' प्रिंस कौड़ी 'है जो1करोड़ पौंड से भी महंगी होंगी।यह कौड़ी संसार में एक ही है,जो बिट्रिश संग्रहालय में रखी हुई हैं। इसी तरह' गट्टाटा 'कौड़ी भी है जो पूरे विश्व में कुल 30 ही हैं और एक कौड़ी की कीमत करीब 15 हजार रुपए हैं विश्व में कुल 187 किस्में की कौड़ियां हैं जिनमें 36 किस्में भारत में पायी जाती हैं।राजमुदा का सम्मान प्राप्त कौड़ी को अमूल्य माना जाता है और इसी वजह से इस बेशकीमती कौड़ी को ही घूरे पर चढ़ाकर सम्मान दिया जाता है।

इस दीप को जलाने का अपना विशेष महत्व है। -प्राचीनकाल में राजा हेमन्त के पुत्र को शाप मिला था कि विवाह होते ही काल का गास बन जायेगा।एक राजकुमारी से विवाह हुआ और राजकुमार की तुरन्त मृत्यु हो गई। राजकुमारी ने अपने करुण विलाप से यम से पति के प्राण वापस ले लिए। यम ने जीवनदान देते हुए कहा -'जो व्यक्ति इस दिन अखण्ड दीपक जलाकर यम (मेरा)का पूजन करेगा ,वह कभी अकाल मृत्यु को प्राप्त नहीं होगा। '-इसलिए आज भी यमराज को प्रसन्न करने के लिए 'घूरे 'को अपने हाथों से साफ कर वहां पर घर की गृहणियां तेल का दीपक जलाती हैं। 'घूरे 'पर चढ़ाई जाने वाली कौड़ी धन लक्ष्मी का प्रतीक मानी जाती है।

ऐसा माना जाता है कि जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर ने इसी दिन निर्वाण प्राप्त किया था। दीपों के प्रकाश में आध्यात्मिक दीपक का आ'न किया।मानवता को सनातन सर्वोदय चेतना देकर अमृतपान कराया,इसलिए हर्षोल्लास से दीपावली पर्व मनाते हैं।

संत ज्ञानेश्वर ने दीपावली को ' ऐसा आध्यात्मिक पर्व 'बताया जो मन के अज्ञान को दूर करके ज्ञान का प्रकाश फैलाता है।

अकाल से दुःखी राजा अग्रसेन ने वन में जाकर माता लक्ष्मी की घोर तपस्या की।जिस पर माता लक्ष्मी ने साक्षात दर्शन दिए। राज्य में वर्षा करा दी ,तभी से भारत में सनातन धर्म को मानने वाले दीपावली पर्व पर श्री गणेश और माता लक्ष्मी की पूजा करतें हैं। लक्ष्मी के स्वागत में लोग अपने घरों की खूब अच्छे से चूल-धूल झाड़कर सफाई ,रंग-रोगन करते हैं। द्वार पर रंगोली सजाई जाती हैं ,तरह-तरह के लजीज पकवान जैसे गुझियां,सवाली,नमकीन पेठा,दाल का हलवा,मोतीचूर के लड्डू ,दिल खुशहाल की चक्की ,मठरी,शक्करपारे,मीठी खीर,चूरमा -दाल -बाटी,पूरी, कैर -सांगरी की सब्जी ,मशालेदार आलूदम,दही बड़े और न जाने क्या-क्या !आतिशबाजी (आकाशदीप ,कंडील),पटाखें , अनार ,फुलझड़ी जलाई जाती हैं। पूरा देश रंग-बिरंगी रोशनाई (प्रकाश)से जगमगा उठता हैं।

दीपावली की रात में घर का दरवाजा बंद नहीं किया जाता है। रात भर तेल और घी का दिया जलता हैं।गणेश -लक्ष्मीजी की पूजा की जाती हैं ,फिर यथाशक्ति 51 ,31 या 21 तिल्ली के तेल के या फिर सरसों के तेल के दिए जलाकर पूजा करते हैं फिर अपने घर के मंदिर ,बालकोनी,कमरे ,घर के दरवाजे पर रख देते हैं। कई राजस्थानियों में गृहणियां दीपावली -पूजन के उपरांत चूने या गेरू में रुई भिगोकर चक्की ,चूल्हा ,सिल्ल ,लोढ़ा तथा छाज (सूप)पर तिलक काढ़ती हैं फिर दूसरे दिन (4बजे सुबह) अंधेरे में उठकर लक्ष्मीजी की कहानी सुनकर घर में बासी झाड़ू देकर उस इकठ्ठे कूड़े को 'सूप में रखकर घर के मुख्य द्वार पर कूड़ा समेत सूप को उलटकर झाड़ू से सूप पर मारते हुए सात बार'(हाकी रेचुकी रे,दरिद्र बाहर रे,लक्ष्मी घर रे)लक्ष्मी -लक्ष्मी आओ ,दरिद्र -दरिद्र जाओ 'कहकर सूप (पुराने छाज)को वहीं छोड़कर केवल बेलन लेकर घर के भीतर आ जाती हैं और दरवाजा बन्द कर लेती हैं।उसके बाद बासी दिया पूजते हैं अर्थात -रात वाले छोटे दीयों में तेल डालकर बड़े दीपक को मिलाकर सात दिया फिर जलाकर रात की तरह पूजते हैं। उन्हें फिर सब जगह रखकर बड़ो का आशीर्वाद लेते हैं।इस दिन घर में बिल्ली आए तो उसे भगाना चाहिए।

फिर महिलाएं गोबर से गोवर्धन बनाकर नथ ओढ़ना पहनकर उसकी विधिवत गोवर्धन- पूजा करती हैं।दूसरे दिन भैया दूज पर बहनें अपने भाईयो को घर बुलाकर उनका मनपसंद पकवान बनाकर उन्हें प्रेम से भोजन करवाती है और माथे पर टीका करके हाथ में नारियल देती है और भाई भी यथाशक्ति गिफ्ट या रुपए देते हैं।आप को बता दे मुगल सम्राट अकबर ने दीपावली पर्व को 'राष्ट्रीय पर्व 'की संज्ञा दी थी।इस पावन पर्व का धार्मिक ,सांस्कृतिक ,आध्यात्मिक ,ऐतिहासिक और सामाजिक महत्व हैं। इस प्रकार यह दीपक और आतिशबाजी का आलोक पर्व है इस बार दीपावली 24 नवंबर सोमवार को है। यानी कि आज है अतःसभी बड़े बच्चों को इस कोरोना के संकट से बचते हुए मास्क,सेनिटाइजर का प्रयोग करते हुए सावधानीपूर्वक पटाखों को थोड़ी दूरी पर रखकर छोड़ना हैं तभी दीपावली मनाने में आनन्द की अनुभूति होगी। आप सभी अपनो बन्धु बान्धवों के संग दीप मालिकाओं के त्योहार को मनायें।हम आप सभी से यह कहते हुए विदा लेते है - ना ही काहुँ से दोस्ती ' ना ही काहुँ से बैर ।

खबरी लाल तो माँगे सबकी खैर ॥ अलविदा ' फिर मिलेंगे तीरक्षी नजर से तीखी खबर के संग । दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

हर दिन, हर घर आयुर्वेद का नारा तभी सार्थक होगा जब सभी प्रकृति को करेंगे अंगीकार

डॉ मनजीत कौर

आयुर्वेद विज्ञान के पृथ्वी पर संस्थापक भगवान धन्वंतरि के अवतरण दिवस,धनतेरस को वर्ष 2016 से आयुर्वेद दिवस के रूप में मनाया जाने लगा है। धनतेरस का संबंध भगवान धन्वंतरि से बताया जाता हैक्योंकि भगवान धन्वंतरि का जन्म धनतेरस को ही हुआ था ऐसी मान्यता है। यह शाश्वत सत्य है कि जिसके पास उत्तम स्वास्थ्य है वही सबसे अधिक धनवान है। इसलिए कहा जाता है किपहला सुख निरोगी काया ईश्वर ने जब सृष्टि की रचना की तो उसने जीवों के भरण पोषण के लिए प्रकृति कीरचना भी की । यह भी शाश्वत सत्य है कि जो पैदा होगा उसकी मृत्यु भी निश्चित है,इसलिए स्वभाविक है कि इसके कारण रोगभी होंगे फिर यदि रोग होंगे तो उसकी उपचार भी होगा।

संस्कृत का एक श्लोक है 'रोगस्तु दोषवैषम्यं दोषसाम्यमरोगता।'

आयुर्वेद विज्ञान के अनुसार वात पित्त कफ दोषों का विषम होना ही रोग है और इन तीनों दोषों की साम्यावस्थाही निरोगी काया का सूचक है।

स्वास्थ्य की जितनी सुंदर परिभाषा आयुर्वेद में बताई गई है उससे सुंदर परिभाषा और कहीं नहीं मिलती है।

'समदोषःसमाग्निश्च समधातुमलक्रियः। प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थ्य इत्यभिधीयते।।'

केवल तीनों दोषों का सम होना ही नहीं बल्कि आयुर्वेद में जो तेरह अग्नियाँ बताई गई है उनका सम होना,सातोंधातुओं और मलादि क्रियाओं का सम होना एवं शरीर,आत्मा, इन्द्रियाँ (ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ-दस) औरमन का प्रसन्न होना स्वस्थ होना कहलाता है।

रोगों के उपचार के लिए ही ईश्वर ने विविध वनस्पतियों,खनिज पदार्थों, जीव-जंतुओं को सृजन किया है ताकिमनुष्य अपनी बुद्धि विवेक और प्राप्त ज्ञान के आधार पर रोगों की चिकित्सा कर सके।

'किंन्चिद्दोषप्रशमनं किन्चिद्धातु-प्रदूषणम्। स्वस्थवृत्तौ मत्तं किन्चित्त्रिविधं द्रव्यमुच्यते।'

(शेष पृष्ठ >>7 पर)

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज सामाजिक
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
5
वर्ष : 01, अंक : 05, नई दिल्ली, बुधवार, 26 अक्टूबर, 2022

हिंदू पर्व दिवाली से कैसे जुड़ी पूरी दुनिया

आर.के. सिन्हा

भारत से हजारों किलोमीटर दूर बसे भारतवंशी और भारत में रहने वाले करोड़ों गैर-हिन्दू भी प्रकाशोत्सव से अपने को जोड़ते हैं। दिवाली हिन्दू पर्व होते हुए अपने आप में व्यापक अर्थ लिए हैं। यह तो अंधकार से प्रकाश की तरफ लेकर जाने वाला त्योहार है। अंधकार व्यापक है, रोशनी की अपेक्षा। क्योंकि अंधेरा अधिक काल तक व्याप्त रहता है, अधिक समय तक रहता है। दिन के पीछे भी अंधेरा है, रात का। दिन के आगे भी अंधेरा है, रात का। भारत से बाहर बसे करीब ढाई करोड़ भारतीय मूल के लोग संसार के अलग-अलग देशों में प्रकाश पर्व को मनाते हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन 24 अक्टूबर को व्हाइट हाउस में दीपावली मनाएंगे, जबकि उनके पूर्ववर्ती डोनाल्ड ट्रंप की अपने फ्लोरिडा स्थित मार-ए-लागो रिजॉर्ट में 21 अक्टूबर को यह त्योहार मनाने की योजना है। बाइडन की भारतीय अमेरिकी समुदाय के प्रतिष्ठित सदस्यों और उनके प्रशासन के सदस्यों के साथ दीपावली मनाने की योजना है। प्रथम महिला जिल बाइडन भी 24 अक्टूबर को व्हाइट हाउस में होने वाले इस उत्सव में शामिल होंगी। इस बीच, रिपब्लिकन हिंदू गठबंधन (आरएचसी) ने मंगलवार को घोषणा की कि ट्रंप अपनी पार्टी के सदस्यों और भारतीय-अमेरिकी समुदाय के नेताओं के साथ 21 अक्टूबर को अपने मार-ए-लागो रिजॉर्ट में दीपावली मनाएंगे। हिन्दू मां की बेटी अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने पिछले साल दीपावली मना रहे दुनियाभर के लोगों और सभी अमेरिकियों को दीपों के उत्सव की बधाई दी थी। उन्होंने कहा, ''यह उत्सव हमें अपने देश के सबसे पवित्र मूल्यों, परिवार और दोस्तों के प्यार के लिए हमारे आभार, जरूरतमंद लोगों के प्रति मदद का हाथ बढ़ाने की हमारी जिम्मेदारी और अंधेरे पर रोशनी को चुनने की हमारी ताकत, ज्ञान और बुद्धिमत्ता की तलाश, अच्छाई और अनुग्रह का स्रोत बने रहने की याद दिलाता है। हमारे परिवार की ओर से मैं आप सभी को दिवाली की शुभकामनाएं देती हूं।'' अभी मैं सिंगापुर गया था कपूरा सिंगापुर इस तरह से सजाया गया है जैसे कि चाइनीज नव वर्ष पर सजाते हैंक पूछने पर पता चला कि दीपावली पर पूरे शहर को सजाने का काम सिंगापुर की सरकार द्वारा किया जाता है क

इस बीच, कैरिबियाई टापू देशों जैसे त्रिनिडाड-टोबैगो तथा गुयाना में भारतवंशी बहुत उत्साह और प्रेम के साथ मनाते हैं दीपोत्सव। इनमें त्योहारों का अंत होता दिवाली मनाकर। इससे पहले गणेश पूजा, पितृपक्ष, नवरात्रि और रामलीला मनाई जाती है। त्रिनिडाड-टोबैगो के राजधानी के वसंत विहार में स्थित हाई कमीशन में हर बार दिवाली परम्परागत और उत्साह से मनाई जाती है। कुछ साल पहले तक यहां त्रिनिडाड- टोबैगो के हाई कमिश्नर पंडित मणिदेव प्रसाद खुद दिवाली पर हाई कमीशन परिसर के बाहर रंगोली बनवाते हुए मिल जाते थे। गयाना, मारीशस, फीजी, सूरीनाम में दिवाली भव्य तरीके से मनाई जाती है। उनके भारत की राजधानी स्थित हाई कमीशन में काम करने वाले भारतवंशी राजनयिक भी दिवाली भारतीय परंपराओं और संस्कारों के अनुसार मनाते हैं। इनके पूर्वज 150 साल से भी पहले सात समंदर पार चले गए थे। त्रिनिडाड- टोबैगो नोबेल पुरस्कार विजेता लेखक वी.एस. नायपाल ने भी एक दिवाली राजधानी में मनाई थी। वे तब त्रिनिडाड- टोबैगो हाई कमीशन में आयोजिक कार्यक्रम में उपस्थित भी रहे थे। वे वहां उपस्थित अतिथियों को बता रहे थे कि उन्हें अपनी पहली भारत यात्रा के दौरान यहां पर दिवाली की रात का नजारा देखकर आश्चर्य हुआ था। कारण यह था कि मुंबई में लोग घरों के बाहर आलोक सज्जा बिजली के बल्बों से कर रहे थे, जबकि उनके देश में आज के दिन भी दिवाली पर मिट्टी के दीयों में तेल डालकर आलोक सज्जा करने की परम्परा खूब है। वी.एस.नायपाल पहली बार 1961 में मुंबई में आए थे। संयोग से उस दिन दिवाली थी।

मारीशस को लघु भारत कहा जाता है। इसकी दिल्ली में स्थित एंबेसी में दिवाली, दिवाली से एक दिन पहले पूजन और रोशनी की जाएगी। यहां से प्रधानमंत्री प्रविंद जगन्नाथ की तरफ से राजधानी के एक मल्होत्रा परिवार को दिवाली पर मिठाई के डिब्बे और लक्ष्मी पूजा की सामग्री पहुंचाई जाती है। प्रविंद जगन्नाथ की बड़ी बहन शालिनी जगन्नाथ मल्होत्रा का विवाह करोल बाग में रहने वाले एक मल्होत्रा परिवार के सुपुत्र डॉ.कृष्ण मल्होत्रा से 1983 में हुआ था। तब ही से मारीशस एँबेसी का मल्होत्रा परिवार से संबंध बन गया था। एक और लघु भारत सूरीनाम में कुछ साल पहले भारतवंशी और भोजपुरी भाषी चंद्रिका प्रसाद संतोखी राष्ट्रपति चुने गये थे। सूरीनाम के राजधानी दिल्ली स्थित हाई कमीशन की बिल्डिंग में भी दिवाली बड़े ही उत्साहपूर्वक तरीके से मनाया जाता है। नेपाल में दिवाली पर बिल्कुल भारत जैसा ही माहौल बन जाता है। यहां भी घरों को सजाने, एक दूसरे को उपहार देने और देवी लक्ष्मी की पूजा करने की प्रथा है जो कि बिल्कुल भारत जैसी ही है।

अगर हम बात अपने भारत की करें तो दीपोत्सव को ईसाई भी धूम-धाम से मनाते हैं। दीपोत्सव पर राजधानी के ब्रदर्स हाउस में रहने वाले अविवाहित पादरी भी दीये जलाएंगे। यहां पर छह अविवाहित पादरी रहते हैं। इनका कहना है कि दिवाली और क्रिसमस जैसे पर्व अब धर्म की दीवारों को लांघ चुके हैं। इन्हें सब मनाते हैं। दिवाली तो अंधकार पर प्रकाश की विजय दर्शाती है। ब्रदर्स हाउस में विवाहित पादरियों को रहने के लिये स्पेस नहीं मिलता। दरअसल भारत में ब्रदरहुड ऑफ दि एसेंडेंड क्राइस्ट की स्थापना सन 1877 में हुई थी। इस संस्था का संबंध कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी से है। इन्होंने ही राजधानी में सेंट स्टीफंस कॉलेज और सेंट स्टीफंस अस्पताल की स्थापना की। इन्होंने शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में ठोस कार्य किया है। चूंकि ये सब पादरी ब्रदरहुड ऑफ दि एसेंडेंड क्राइस्ट से संबंध रखते है, इसलिये इन्हें ब्रदर भी कहा जाता है। यहां पर रहने वाले पादरी मानते हैं कि रोशनी के इस पर्व को खुशियों का पर्व भी कहा सकता है। दीपावली के आने से पहले ही सारे माहौल में प्रसन्नता छा जाती है। दीपावली पर्व के दौरान धन की अनावश्यक बबार्दी को रोककर राशि का प्रयोजन पुरुषार्थ और परमार्थ के सद्प्रयोजनों में कर आने वाली पीढ़ी को हम यज्ञमय जीवन की सौगात दे सकते हैं। यूं तो यहूदी धर्म को इजराईल के साथ जोड़कर देखा जाता है। पर भारत के मुंबई, केरल, दिल्ली वगैरह में बसे हुए यहूदी दिवाली को धूमधाम से मनाते हैं। राजधानी का एकमात्र जूदेह हयम सिनगॉग है। यहां दिवाली से एक दिन पहले दीये जलाने की व्यवस्था होगी। यह सारे उत्तर भारत में यहुदियों की एकमात्र सिनगॉग है। इसके रेब्बी एजिकिल आइजेक मालेकर दिवाली से पहले सिनगॉग के बाहर दीये जलाते हैं। दिवाली पर जब अंधेरा घना होने लगेगा तो वे दीये जलाकर प्रकाश करेंगे। भारत के यहूदी कहते हैं कि वे भारत में रहकर आलोक पर्व से कैसे दूर जा सकते हैं। हम यहूदी हैं, पर हैं तो इसी भारत के।

भारत के लाखों मुसलमान भी दिवाली को अपने तरीके से मनाते हैं। वे दिवाली पर अपने घरों- दफ्तरों की सफाई करने के अलावा चिराग जलाते हैं। राजधानी के इमाम हाउस में चिराग जलाने की परंपरा है। इस मस्जिद के इमाम मौलाना उमेर इलियासी कहते हैं कि दीपावली का पर्व हमें अंधकार से प्रकाश की ओर जाने की प्रेरणा देता है। दीप प्रज्वलित कर अंधकार को मिटाकर प्रकाशमान वातावरण का निर्माण किया जाता रहा है। दरअसल भारत में रहने वाला कौन इंसान होगा जो दिवाली से दूर रह पाता होगा। यह असंभव है। दिवाली प्रेम-भाईचारे और अपने को अंधकार से प्रकाश की तरफ लेकर जाने का पर्व है।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं)

अंधकार से लड़कर ही तो मिल पाता हैं, उजियारों का मुकाम

नरेंद्र तिवारी

जीवन अँधियारों और उजियारों का सयुंक्त प्रक्रम हैं। अंधेरे-उजाले को हम मनुष्यों ने सुख-दुख, आशा-निराशा की भावनाओं का एहसास दें रखा हैं। यहीं एहसास वह भाव हैं, जिसने इंसान को जगत के करोड़ों जीव-जंतुओं में अलग पहिचान दी हैं। जंहा मॉनव हैं, वहां भावों का, एहसासों का, भावनाओं और संवेदनाओं का बड़ा महत्व हैं। जिन मनुष्यों में प्रेम, आदर, सम्मान का भाव नहीं वह पशुतुल्य हैं। दुख जीवन का अंश हैं, यह जीवन का अंधियारा पक्ष हैं। यही दुख व्यक्ति को हालातो से लड़ने की प्रेरणा देतें हैं। अंधियारों से उजियारो तक पहुचने की लड़ाई का नाम ही तो जीवन संघर्ष हैं। दुख से सुख प्राप्त करने के लिए लड़ी गयी लड़ाई ही व्यक्ति के जीवन के महत्वपूर्ण संघर्ष के क्षण हैं, स्मृतिपल हैं, चिर स्थाई यादें हैं। यह वह पल हैं जब मनुष्य अपने जीवन मे छाए अंधेरों से लड़कर सुख प्राप्ति की कामनाएं करता हैं अपने जीवन की कठिनाइयों से निजात पाने की कोशिश करता हैं। इन्हीं दुखों या यूँ कहें की मनुष्य जीवन की समस्याओं से लड़ने के लिए मॉनव ने परिवार और समाज जैसी इकाइयों का निर्माण किया। परिवार और समाज ने सामूहिक कल्याण की भावनाओं को मूर्त रूप देने के लिए राष्ट्र रूपी इकाई का गठन किया। नागरिकों की सामूहिक चेतना से बने राष्ट्र निर्माण के भाव के पीछे नागरिकों की समस्याओं के निराकरण का सामूहिक प्रयास छुपा हुआ हैं। एक बालक जिस प्रकार अपने माता-पिता से आशा रखता है की वें उसके दुख-दर्द को उसकी समस्याओं को दूर कर भविष्य का मार्ग प्रसस्त करेंगें। उसी प्रकार एक नागरिक अपने राष्ट्र से जीवन की कठिनाइयों को आसान बनाने की आशा, अपेक्षा ओर विश्वास रखता हैं।

दीपावली उत्सव भी तो अंधियारे से उजियारे की ओर चलने, सतत बढ़ने की प्रेरणा का पर्व हैं। दीपावली अमावस की काली रात को मनाई जाती हैं। अमावस की रात में दीपावली को मनाने के पीछे भी शायद अंधेरों से लड़ने का भाव छुपा हैं। भारतवर्ष सहित सम्पूर्ण विश्व में हजारों-लाखों बरसों से दीपोत्सव का यह पर्व श्रीराम के 14 वर्ष के वनवास से अयोध्या लौटने के उल्लास के रूप में मनाया जाता हैं। यह पर्व दीपावली के एक दिन पूर्व राक्षक नरकासुर का भगवान कृष्ण द्वारा किये वध के कारण भी मनाया जाता हैं। यह पर्व जिस उत्साह के साथ अयोध्या में मनाया जाता हैं। गौकुलवासी भी इसे उतने ही उत्साह से मनाते आ रहें हैं। प्रकाश का यह पर्व मनुष्य जीवन मे उजास लाने का पर्व हैं। मनुष्य समाज शुरूवातीं दौर में वस्तुओं का विनिमय कर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता था। अब रुपयों का चलन हैं। दीपावली तब भी मनाई जाती थी जब समाज मे रुपयों का चलन नहीं था। अब अपनी आवश्यकताओं के लिए मनुष्य को रुपयों की आवश्यकता पड़ती हैं। सदियों से एक विशाल जनसमुदाय महालक्ष्मी की आराधना, पूजा कर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन की मांग ही तो करता हैं। वह ऐश्वर्य और समृद्धि प्राप्ति की प्रार्थना करता हैं। वर्तमान युग मे धारणा है, कि खुशियों को रुपयों से खरीदा जा सकता हैं। यह धारणाए कितनी सच है, यह तो नही कहा जा सकता हैं किन्तु विद्वानों का मत है कि धन से खुशियों का, आनन्द का कोई लेना देना नहीं हैं। जब रुपयों का प्रादुर्भाव नहीं हुआ था तब भी मनुष्य आनन्दित हुआ करता था। रुपयों के प्रादुर्भाव ने मनुष्य के आनन्द को कम जरूर कर दिया हैं, इसने मॉनव जीवन की चिंताओं को बढ़ाया हैं। इस दौर में एक बड़े वर्ग का अभी भी यह मानना हैं कि माल है तो ताल हैं। यह वर्ग धन से निर्मित बड़ी-बड़ी अट्टालिकाओं के वातानुकूलित कमरों में अत्यंत सुविधायुक्त जीवन को ही महालक्ष्मी की कृपा मानकर चलता हैं। जीवन के ऐशो आराम से युक्त यह वर्ग भौतिक सुख सुविधाओं के संग्रहण को ही जीवन की प्रगति मानता हैं। नए जमाने के बहुत से लोग खुशी को धन का गुलाम समझते हैं। किंतु आनन्द, प्रसन्नता, ठहाके, खुशी तो सुदूर जंगल की झोपड़ियों में भरपूर महसूस होतीं हैं। यहां एहसास भी है, भाव भी हैं, संवेदनाएं भी हैं, अपनत्व का जो भाव ग्रामीण परिवेश में दिखाई देता हैं, वह शहरों में निर्मित क्रांकीट ऊंची-ऊंची इमारतों में नहीं हैं। यहां तो स्वार्थ है, लालच है, गला काट प्रतिस्पर्धा हैं। जो प्रेम और अपनत्व का भाव गांव के खेतों, खलियानों, पीपल की छांव में हैं वह ओर कही नही मिलता इसे रुपयों से नहीं खरीदा जा सकता हैं। गांव में खेतों को हलने, बखरने, जोतने ओर कटाई हेतु सामूहिक प्रयास किये जातें है। यह एक दूजे के सहयोग से जीवन मे उजास लाने का सामूहिक प्रयास भर हैं। यही है, असल मे वास्तविक दीपो का उत्सव प्रकाश की आगवानी का पर्व।

दीपावली के दिन महालक्ष्मी की पूजा समुद्र मंथन में शरद पूर्णिमा पर याने दीप पर्व के 15 दिन पूर्व महालक्ष्मी के प्रकट उत्सव के कारण की जाती हैं। अमावस्या की काली अंधेरी रात में दीपावली की कल्पना अंधेरी राहों से गुजरकर प्रकाश रूपी मंजिल की प्राप्ति का संदेश हैं। इस पर्व पर धन संपदा प्राप्ति की कामनाएं तो की ही जाती है, खुशहाल जीवन, निरोगी काया की कामनाएं भी की जाती हैं। वर्तमान के इस दौर में धनप्राप्ति की लिप्सा में मनुष्य सभी सीमाओं को लांघ रहा हैं। लालच, बेईमानी, लूट, खसोट, भ्रष्टाचार से कमाए धन के साथ बुराइयों का हुजूम भी आ टपकता हैं। यह बुराई रोगों, व्याधियों ओर कलह के रूप में सामने आती हैं। महालक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए साधनों की पवित्रता एवं पवित्र भावनाओं की जरूरत हैं। यह धन प्राप्ति की अनिवार्य शर्त हैं। अनुचित साधनों से एकत्रित धन संपदा अपने साथ रोग, व्याधियों, कलह ओर आफत को आमंत्रित करतीं हैं। समाज मे लालच ओर स्वार्थों से एकत्रित धन संपदा के मालिकों की स्थिति को निकट से देखने पर बनावटी चकाचौंध तो दिखती हैं, इस चकाचौंध में शांति कहीं खो जाती है, अपनत्व का भाव खत्म हो जाता है, मतलबी रिश्ते नजर आतें है। जब प्रजातंत्र नहीं था, तब सत्ता के लिए लड़ाई इसी ऐशोआराम की प्राप्ति के लिए ही तो होती थी। जंहा बेटा सत्ता के लिए अपने बाप की गर्दन पर ही तलवार चलाने से गुरेज नहीं करता था। हर मनुष्य को हक है कि वह अपने कर्म से लक्ष्मी का आ'ान करें, धन संपदा प्राप्त करें। इस प्राप्त सम्पदा को परिवार समाज और राष्ट्र की सेवा में लगाएं। एक दूसरे का ख्याल रखकर ही हम सबकी दीपावली मना सकते हैं। नीरज की इन पंक्तियों की तरह 'जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना, अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।'

यही पवित्र कामनाएं जो धरा के अन्धकार को दूर करने के भाव रखती हैं। इस धरती पर दीपावली की सोच को उजागर करती हैं। प्रकाश की ओर चलने की सोच, उजालों की ओर बढ़ने की सोच, सोच अंधेरों से लड़ने का साहस प्रदान करने की, यही सोच तो मनुष्य को कठिनाइयों से लड़ने की प्रेरणा देती हैं। अंधेरों से लड़कर ही उजालों के मुकाम पर पहुचा जा सकता हैं। उजियारों तक पहुचने का ओर कोई छोटा रास्ता नहीं हैं। दीपावली सुख, ऐश्वर्य ओर वैभव प्राप्ति की कामनाओं का दिवस हैं। यह कामना भारत मे हमेशा से सम्पूर्ण धरा के लिए की जाती रहीं हैं। जगत की खुशहाली की मंगलकामनाएँ करना ही तो दीपावली का असल सन्देश हैं।

राजनीतिक तरकश
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
वर्ष : 01, अंक : 05, नई दिल्ली, बुधवार, 26 अक्टूबर, 2022

वसुंधरा समर्थकों के घर वापसी पर लगी रोक

रमेश सर्राफ धमोरा

राजस्थान में अगले विधानसभा चुनाव होने में करीबन एक साल का समय बाकी रह गया है। चुनाव लड़ने के इच्छुक नेता अब चुनावी मैदान में आकर लोगों से जन संपर्क करना शुरू कर दिया है। मगर राजस्थान में सत्तारूढ़ दल कांग्रेस व मुख्य विपक्षी दल भाजपा में बड़े नेताओं की लड़ाई मिटने का नाम नहीं ले रही है। जिससे दोनों ही बड़े दलों का चुनावी अभियान भी प्रभावित हो रहा है। राजस्थान कांग्रेस में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत जहां अपनी कुर्सी बचाने के लिए अपने पूरे दाव पेच आजमा रहे हैं। वही उनके विरोधी पूर्व उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट कांग्रेस आलाकमान के भरोसे मुख्यमंत्री बनने का सपना देख रहे हैं।

भाजपा की स्थिति तो कांग्रेस से भी अधिक खराब है। जहां कांग्रेस में गहलोत व पायलट के दो ही खेमे है। वहीं भाजपा में तो हर बड़े नेता का अपना खेमा है। आपसी गुटबाजी को मिटाने के लिए भाजपा के बड़े नेता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, संगठन महासचिव बीएल संतोष लगातार राजस्थान का दौरा कर पार्टी के सभी नेताओं को एकजुट करने का प्रयास करते हैं। मगर जैसे ही दिल्ली से आए बड़े नेता राजस्थान से बाहर निकलते हैं। उसके तुरंत बाद ही प्रदेश भाजपा के नेता फिर से एक दूसरे की टांग खिंचाई में लग जाते हैं।

भाजपा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया आज भी खुद के मुख्यमंत्री होने का भ्रम पाले हुए हैं। उनका व्यवहार पूर्व मुख्यमंत्री का न होकर आज भी मुख्यमंत्री की तरह का ही रहता है। वसुंधरा राजे मानती है कि राजस्थान में भाजपा की सबसे बड़ी नेता वही है। उनके बिना कभी भी प्रदेश में भाजपा की सरकार नहीं बन सकती है। एक समय था जब राजस्थान में वसुंधरा का मतलब ही भाजपा होता था। मगर अब समय पूरी तरह से बदल चुका है। नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद भाजपा में क्षेत्रीय नेता कमजोर पड़े हैं। वहीं केंद्रीय नेतृत्व मजबूत हुआ है।

आज भाजपा में सारे फैसले मोदी, शाह, नड्डा करते है। दिल्ली आलाकमान का फरमान ही भाजपा में कानून माना जाता है जिसे सभी मानने को बाध्य होते हैं। राजस्थान को लेकर भी भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व की सोच कुछ ऐसी ही मानी जाती है। मोदी, शाह की जोड़ी ने 2018 के विधानसभा चुनाव में वसुंधरा राजे को पूरा फ्री हैंड दिया था तथा उनको ही नेता प्रोजेक्ट कर राजस्थान विधानसभा का चुनाव लड़ा गया था। मगर उस चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के धुआंधार प्रचार के बावजूद भाजपा चुनाव हार गई थी।

उस समय वसुंधरा राजे का सबसे अधिक विरोध उनके ही राजपूत समाज द्वारा किया गया था। चुनाव प्रचार के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जनसभाओं में वसुंधरा राजे की उपस्थिति के दौरान ही जनता द्वारा वसुंधरा के खिलाफ नारेबाजी की जाती थी कि मोदी तुझसे बैर नहीं वसुंधरा तेरी खैर नहीं। और उस समय प्रदेश की जनता द्वारा वसुंधरा राजे के खिलाफ की गई नारेबाजी शत प्रतिशत सही भी साबित हुई थी। 2018 के विधानसभा चुनाव में भाजपा जहां 163 से 73 सीटों पर सिमट गई थी। वहीं 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा लगातार दूसरी बार सभी 25 लोकसभा जीतने में सफल रही थी। उस समय के चुनाव परिणामों से भी वसुंधरा का विरोध जाहिर हो जाता है।

विधानसभा चुनाव हारने के बाद भाजपा आलाकमान ने वसुंधरा राजे को राजस्थान की राजनीति से दूर कर उन्हें पार्टी का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बना दिया था। राजस्थान में वसुंधरा विरोधी धड़े के डा. सतीश पूनिया को प्रदेश अध्यक्ष व गुलाबचंद कटारिया को विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष बना दिया गया। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनने के बावजूद वसुंधरा राजे का मन दिल्ली में नहीं लगा और वह लगातार राजस्थान में ही सक्रिय रहने का प्रयास करने लगी। समय-समय पर वसुंधरा राजे गुट के नेताओं ने उनके पक्ष में अभियान चलाकर उन्हें राजस्थान में नेता प्रोजेक्ट करने की मांग भी करते रहे। मगर भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व ने प्रदेश अध्यक्ष पूनिया व उनकी टीम को काम करने के लिए फ्री हैंड दे दिया। संगठन में भी वसुंधरा समर्थकों को ज्यादा तवज्जो नहीं मिली। वसुंधरा ने कई बार प्रदेश में यात्राएं निकालने का प्रयास किया मगर भाजपा आलाकमान ने उनको इजाजत नहीं दी। जिससे उनको अपने कई कार्यक्रम रद्द भी करने पड़े थे।

बीकानेर जनसभा में वसुंधरा राजे पूर्व मंत्री देवी सिंह भाटी को पार्टी में फिर से शामिल करवाना चाहती थी। मगर पार्टी संगठन ने इजाजत नहीं दी फलस्वरूप देवी सिंह भाटी की भाजपा में घर वापसी नहीं हो सकी। यह वसुंधरा राजे के लिए एक बड़ा झटका था। देवी सिंह भाटी बीकानेर क्षेत्र के बड़े नेता माने जाते हैं और पिछले लोकसभा चुनाव में अर्जुन राम मेघवाल को प्रत्याशी बनाने से नाराज होकर भाजपा छोड़ दी थी। मगर अब वह पार्टी में फिर से घर वापसी चाहते हैं और इसकी उन्होंने घोषणा भी कर दी थी। भाटी को पार्टी में शामिल नहीं होने से उनकी बहुत किरकिरी हुई। जिससे नाराज होकर उन्होंने वसुंधरा राजे व उनके समर्थकों को जमकर खरी-खोटी भी सुनाई।

अब विधानसभा चुनाव नजदीक देखकर वसुंधरा राजे फिर से सक्रिय हो रही है। देव दर्शन यात्रा के बहाने वह प्रदेश के अलग-अलग क्षेत्रों में जाकर अपने समर्थकों के माध्यम से अपनी ताकत का एहसास करा रही है। हाल ही में उन्होंने बीकानेर के देशनोक में करणी माता मंदिर में दर्शन करने के बाद वहां एक बड़ी जनसभा का को संबोधित किया था। उन्होने उसी दिन बीकानेर में भी एक बड़ी जनसभा को संबोधित किया था।

बीकानेर जनसभा में वसुंधरा राजे पूर्व मंत्री देवी सिंह भाटी को पार्टी में फिर से शामिल करवाना चाहती थी। मगर पार्टी संगठन ने इजाजत नहीं दी फलस्वरूप देवी सिंह भाटी की भाजपा में घर वापसी नहीं हो सकी। यह वसुंधरा राजे के लिए एक बड़ा झटका था। देवी सिंह भाटी बीकानेर क्षेत्र के बड़े नेता माने जाते हैं और पिछले लोकसभा चुनाव में अर्जुन राम मेघवाल को प्रत्याशी बनाने से नाराज होकर भाजपा छोड़ दी थी। मगर अब वह पार्टी में फिर से घर वापसी चाहते हैं और इसकी उन्होंने घोषणा भी कर दी थी। भाटी को पार्टी में शामिल नहीं होने से उनकी बहुत किरकिरी हुई। जिससे नाराज होकर उन्होंने वसुंधरा राजे व उनके समर्थकों को जमकर खरी-खोटी भी सुनाई।

देवी सिंह भाटी की घर वापसी रोकने के साथ ही पार्टी आलाकमान ने अर्जुन राम मेघवाल व वासुदेव देवनानी सहित कुछ अन्य नेताओं की एक स्क्रीनिंग कमेटी बना दी है। जो पार्टी में शामिल होने वाले नेताओं के बारे में एक रिपोर्ट बनाकर प्रदेश अध्यक्ष को सौपेगी। उसके बाद प्रदेश अध्यक्ष निर्णय करेंगे कि शामिल होने वाले नेताओं को शामिल किया जाए या नहीं।

स्क्रीनिंग कमेटी बनने से वसुंधरा समर्थक पूर्व मंत्री देवी सिंह भाटी, सुरेंद्र गोयल, राजकुमार रिणवा, पूर्व केंद्रीय मंत्री सुभाष महरिया, पूर्व विधायक विजय बंसल सहित कई नेताओं की घर वापसी लटक गई है। वहीं पूर्व में वसुंधरा वसुंधरा राजे के कट्टर विरोधी रहे घनश्याम तिवाड़ी कि ना केवल भाजपा में घर वापसी ही हुई बल्कि उन्हें राज्यसभा में भी भेजा जा चुका है तिवारी 2018 में वसुंधरा से नाराज होकर अपनी अलग पार्टी बनाकर चुनाव लड़े थे। उसके बाद वह कांग्रेस में शामिल हो गए थे। पूर्व केंद्रीय मंत्री नटवर सिंह के बेटे जगत सिंह को भी फिर से भाजपा में शामिल कर भरतपुर का जिला प्रमुख बनवाया जा चुका है।

इसके अलावा पूर्व मंत्री लक्ष्मीनारायण दवे, राधेश्याम गंगानगर, हेमसिंह भड़ाना, धनसिंह रावत, सुखराम कोली, अनिल शर्मा, जीवाराम चौधरी, विमल अग्रवाल, प्रभुदयाल सारस्वत, राजेश दीवान, कुलदीप धनकड़, देवीसिंह शेखावत, महेंद्र सिंह भाटी, अजय सोनी, प्रहलाद टांक, अतरसिंह पगरिया, रत्ना कुमारी, देवेंद्र रावत, विक्रम सिंह जाखल सहित कई लोगों की घर वापसी हो चुकी है। इन्होंने पिछले विधानसभा चुनाव में पार्टी से बगावत कर चुनाव लड़ा था। वसुंधरा समर्थकों की घर वापसी रोककर पार्टी आलाकमान ने उन्हें सीधा संदेश दे दिया है कि राजस्थान में अब उनके मुताबिक राजनीति नहीं होगी। पार्टी नेतृत्व ही फैसले करेगा। अब आगे देखना है कि वसुंधरा राजे भाजपा आलाकमान के समक्ष हथियार डालकर समर्पण कर देती है या बगावत कर अपनी ताकत दिखाती हैं। इस बात का पता तो आने वाले समय में ही चल पाएगा।

(लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार है। इनके लेख देश के कई समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं।)

अध्यक्ष पद चुनाव में भी दिखी गांधी परिवार के साथ गहलोत की नजदीकी

रविवार दिल्ली नेटवर्क

कांग्रेस अध्यक्ष चुनाव में भी राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की प्रासंगिकता कम नहीं हुई है। खड़गे के खिलाफ अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ रहे शशि थरूर की तरफ से गहलोत के खड़गे को समर्थन वाले बयान पर शिकायत दर्ज कराने से यह साबित हो गया है कि कांग्रेस आलाकमान से गहलोत की नजदीकी से पार्टी के भीतर खलबली मची हुई है। शनिवार को भारत जोड़ो यात्रा के दौरान कर्नाटक के बेल्लारी में हुई सभा में भी गहलोत की उपस्थिति और राहुल गांधी व खड़गे के साथ दिखी नजदीकियों से यह स्पष्ट हो गया है कि अशोक गहलोत अभी भी पार्टी नेतृत्व की पसंद बने हुए हैं।

बेल्लारी की सभा में राहुल गांधी और खड़गे के साथ दिखी गहलोत की केमिस्ट्री

अशोक गहलोत शनिवार को तीसरी बार भारत जोड़ो यात्रा में शामिल हुए। पहली बार यात्रा की शुरूआत के समय फिर 16 सितंबर को गहलोत ने राहुल के साथ यात्रा में भागीदारी की थी। बेल्लारी में गहलोत ने राहुल के साथ न केवल रैली में मंच साझा किया बल्कि सिद्धरमैया के भाषण देते वक्त राहुल ने केसी वेणुगोपाल को दूसरी सीट पर भेज गहलोत को अपने पास बुलाया। मंच पर ही दोनों नेताओं के बीच लंबी चर्चा हुई। दोनों के बीच गुजरात चुनाव पर विचार विमर्श हुआ।

अशोक गहलोत शनिवार को तीसरी बार भारत जोड़ो यात्रा में शामिल हुए। पहली बार यात्रा की शुरूआत के समय फिर 16 सितंबर को गहलोत ने राहुल के साथ यात्रा में भागीदारी की थी। बेल्लारी में गहलोत ने राहुल के साथ न केवल रैली में मंच साझा किया बल्कि सिद्धरमैया के भाषण देते वक्त राहुल ने केसी वेणुगोपाल को दूसरी सीट पर भेज गहलोत को अपने पास बुलाया। मंच पर ही दोनों नेताओं के बीच लंबी चर्चा हुई। दोनों के बीच गुजरात चुनाव पर विचार विमर्श हुआ। गौरतलब है कि अशोक गहलोत को गुजरात चुनाव में कांग्रेस के केंद्रीय नेतृत्व ने वरिष्ठ पर्यवेक्षक बनाया है। जल्दी ही गहलोत को गुजरात के दौरे पर जाना है। बेल्लारी में कल भारत जोड़ो यात्रा ने एक हजार किलोमीटर का सफर तय किया।

गहलोत ने पिछले दिनों ही एक बयान जारी करके अध्यक्ष पद चुनाव में खड़गे को समर्थन देने की अपील की थी। थरूर ने इसे नियमों का उल्लंघन बताते हुए चुनाव प्रभारी मधुसूदन मिस्त्री से शिकायत की है। हालांकि कांग्रेस के नेताओं का मानना है कि खड़गे को पहले ही गांधी परिवार का समर्थन प्राप्त है, इसलिए चुनाव में उनके खिलाफत कोई जाएगा इस पर संदेह है। दूसरी तरफ राजस्थान सीएम पद पर बनाये रखकर गांधी परिवार ने पहले ही संकेत दे दिया है कि गहलोत और उनके बीच किसी तरह की दूरी नहीं है। एआइसीसी सूत्रों का कहना है कि यदि सोनिया गांधी के मन में गहलोत के प्रति कुछ भी संदेह होता तो उन्हें खड़गे का प्रस्तावक नहीं बनाया जाता।

कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता के मुताबिक 'गहलोत पार्टी के वरिष्ठ नेताओं में से एक हैं और 50 वर्ष के अपने राजनीतिक करियर में उन्होंने कभी भी नेतृत्व का साथ नहीं छोड़ा। पार्टी के कुछ नेताओं की तरफ से कांग्रेस नेतृत्व पर हुए हमलों के दौरान भी वो संकटमोचक की तरह गांधी परिवार के साथ खड़े रहे हैं। ऐसे में कांग्रेस नेतृत्व और उनके बीच दूरी कैसे हो सकती है?'

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
वर्ष : 01 , अंक : 05, नई दिल्ली, बुधवार, 26 अक्टूबर , 2022

बेजोड़ परम्पराएं जो वागड़ की दिवाली को देश के अन्य हिस्सों से अलग पहचान देती है

नीति गोपेंद्र भट्ट

राजस्थान के सुदूर दक्षिणी हिस्से में मेवाड़ गुजरातऔर मध्य प्रदेश से सटे आदिवासी बहुल वागड़ अंचल में दीपावली की कई ऐसी बेजोड़ परम्पराएँ है जो देश में अन्य कहीनही देखी जाती है। इनमें 'दीवाली आणा' (गौना) और 'मेरिया' की अनूठी परम्पराएं हर किसी को रोमांचित करती हैं।

वागड़ अंचल में मेवाड़ गुजरात और मालवा की मिली जुलीआदिवासी लोक संस्कृतियों के दर्शन होते है।वैसे तो जनवरी सेकलेंडर वर्ष की शुरूआत होती है वैसे ही वागड़ में दिवाली को हीनया वर्ष माना जाता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के गृह प्रदेश वागड़के निकटवर्ती गुजरात में दीपावली के दूसरे दिन लोग एक दूसरेको जिस प्रकार साल मुबारक से सम्बोधित करते है वैसे ही वागड़में 'जुहार सा' कहा जाता है।दीपावली के दिन रतन (मिट्टी केबर्तन और खिलोनें)लेकर आना नए साल में सबसे पहलेसीकन(विशेष प्रकार का खीरा)खाकर राजा बनने की परम्परा केसाथ ही मुल्ला गणेश का मेला गोवर्धन पूजा अन्नकूट प्रसाद औरभाई दूज पर दाल बाटी चूरमा खाने की परम्परायें भी प्रचलित हैं।

दिवालीआणे (गौना) की परंपरा

वागड़ में दिवाली पर दीवाली आणा (गौना) एवं मेरिया की पारंपरिक झलक पूरे यौवन पर होती है। वागड़अंचल में यह खास परंपरा विशेष कर नवविवाहित युवाओं से जुड़ी हुई है। दीपावली से कुछ दिन पहलेनवविवाहिता को ससुराल लाने की परंपरा को दिवाली आणा कहा जाता है। जिसमें शादी के बाद की पहलीदिवाली के पर्व को ससुराल में मनाने के लिए उसके मायके से लाने के लिए दूल्हे के साथ ही उसके भाई मित्रजाते हैं।

दुल्हन उनके साथ अपने ससुराल आती है। पीहर से बहू को पहली बार हमेशा के लिए पीहर से लिवालाने के लिए किसी प्रकार के खास मुहूर्त की आवश्यकता नहीं होती है।यहाँ यह प्रथा सदियों से चली आ रही है।

दीवाली आणा दीपावली से देव दिवाली के मध्य 10-15 दिन में कभी भी हो सकता है। इसमें वर के साथ जानेवाले उसके भाई गरासिया मित्र बंधु सगे-सम्बंधियों एवं उनके परिवार वालों का वधू पक्ष द्वारा पूरी मान-मनुहारके साथ स्वागत किया जाता है। इन पामणों (मेहमानों) को स्वादिष्ट भोजन जिमाने के साथ ही वस्त्र और अन्यवस्तुएँ उपहार भेंट दिए जाते हैं।

मेरिया की परम्परा

दीवाली आणा के साथ ही मेरिया की परम्परा भी प्राचीनकाल से चली आ रही है। मेरियू दीपक का ही एकअलग रूप है. मेरीयू बनाने के लिए गन्ने के छोटे टुकड़े करते हैं. फिर सूखा नारियल लेकर उसके पैंदे में छेद करगन्ने को ऊपरी हिस्से में लगाया जाता है. इन दोनों को गोबर से लीप कर सुखाते हैं. इसके बाद मेरीयू में रुई कीबत्ती लगा कर तेल भर कर जलाया जाता है. इसे बनाने में नारियल के अलावा मिट्टी के दीपक का उपयोग भीहोता है. मेरिया गन्ने के डंठल, तोमड़ा (लौकी की प्रजाति एवं आकार का बर्तन), रूई एवं कपड़े तथा मिट्टी से बनाया जाता है। तोमड़ा के ऊपरी भाग पर कपड़े एवं रूई की बत्तियों परतेल डालकर इसे मशाल की तरह प्रज्वलित किया जाता है। इसी मशाल को 'मेरिया' (विशेष प्रकार कापंचमुखी दीपक) कहा जाता है।

दीपावली के दिन कहीं रात को और कहीं अगले दिन सुबह यह मशाल भगवान के साथ ही गायों को दिखायीजाती है।साथ ही घर के हर कोने में इसकी परिक्रमा की जाती है। मान्यता है कि इससे घर के तमाम अंधेरे एवंअनिष्ट समाप्त हो जाते हैं तथा गृहस्थी को नई रोशनी मिलती है। दीवाली के अगले दिन दीपावली के अगलेदिन कार्तिक सुदी एकम को नववर्ष की शुभ वेला में अल सुबह भोर में मेरिया की परम्परा का निर्वाह कियाजाता है। इनमें छोटे बच्चे और नव वर वधु अपने अपने स्वयं के घर के साथ ही रिश्तेदारों और पड़ोसियों के घरोंमें जाते है । जहां उनके मशाल नुमा मेरिया में रिश्तेदार और पड़ोसी तेल भरते है । तेल पूरते वक्त 'आजदीवाली काल दीवाली परम दाक्ड़े मेरयूँ' गीत गाया जाता है।

बाद में सभी महिलाएं भगवान राम के आगमन के गीत गाती हैं।साथ ही दूल्हा-दुल्हन को आशीर्वाद दिया जाताहैं।इसके पीछे यह मन्तव्य है कि दूल्हा-दुल्हन का जीवन प्रकाशित रहे, दुल्हन के तेल पुरवाने का मतलब कीदोनों जीवन को सफल बनाने में एक दूसरे के पूरक बने और समाज मे भेदभाव खत्म हो।इस परम्परा का एकविशेष संदेश यह भी है कि समाज मे एकजुटता और समरसता रहे। मेरियू का एक अलग अर्थ भी निकलता है । मेह शब्द एयर रियू से मिलकर बना है।मेह यानी बारिश और रियूमतलब थम गई। इस प्रकार इसे बारिश का मौसम जाने का सूचक भी माना जाता है।

आदिवासी अंचल में दूल्हा पंचमुखी अथवा एक मुखी मेरियू लेकर दरवाजे पर खड़ा रहता है तथा घर कीमहिलाएं तेल लेकर आती है और दुल्हन के हाथों से मेरियू में तेल पुरवाती है। इस दौरान दूल्हा दुल्हन दोनों पक्षोंके परिजन इष्ट मित्र साथ रहते हैं।साथ ही विवाहित वर दिवाली आणा के बाद मेरिया की मशाल को हाथ मेंलेता है एवं इस जलते हुए मेरिये पर वधू तेल पूरती है। फिर वधू के हाथ में मेरिया थमाकर वर तेल पूरता है।इसके बाद नव दम्पति वर-वधू के हाथ में थामे हुए मेरिया में नाते-रिश्तेदार भी तेल पूरते हैं। नव विवाहित युगलमेरिया लिये सगे-संबंधियों के वहां जाते हैं जहाँ इसमें तेल पूरा जाता है। यह तेल स्नेह धार के साथ ही उजियारेका प्रतीक माना जाता है।

इसी तरह नवविवाहित युवतियों के दीवाली आणा पर गाँव जाति-बिरादरी के लोग नव विवाहिता युगल (जिनकेवहाँ दीवाली आणा होता है) के वहाँ जाते हैं। गाँव में जितने भी घरों में दीवाली आणा होता है वहां ये पहुँचते है।गाँवों में लोग दीवाली के अगले दिन तड़के स्नान करके नए कपड़े पहनकर दीवाली आणा वाले दुल्हे के घर कीओर प्रस्थान करते है। गाँव के लोग इकट्ठे होकर गाँव में जितने भी दुल्हे हैं उनके घर-घर जाकर मेरिया (मेरजू) पूरते हैं और सामाजिक-पारिवारिक उत्सव के इस माहौल में लोग थिरकने भी लगते है।इस दौरान सभी कीनिगाहें दुल्हन की झलक पाने को भी उत्सुक रहती हैं। दुल्हा पाँच दिवण वाला मेरिया लेकर आँगन के मध्य खड़ाहो जाता है और उसके चारो ओर अन्य आदमी खड़े रहते हैं। इसके बाद दुल्हन को लेकर युवतियां एवं औरतेंदुल्हन को घर के बाहर लेकर आती है। बाहर आते ही गाँव के युवक-युवतियां पटाखों की बौछार चालू कर देतेहैं। लजायी दुल्हन पाँच बार तेल पूरती है। इसके बाद भाग कर घर में चली जाती है। इस तरह से सुबह छहसात बजे से दस- बारह बजे तक पूरे गाँव में जितने भी दुल्हे हैं उनके घर जाकर गांव वाले तथा नाते-रिश्तेदारगीत गाते हुए मेरजू पूरते हैं।

इसके बाद अपराह्न में गांव के मुखिया या सरपंच के घर ग्रामीणों का हुजूम इकट्ठा होता है। इस स्नेह सम्मेलनमें सभी ग्रामीण एकत्र होते हैं इसमें दीवाली आणा वाले परिवार पाँच नारियल, ढाई सौ ग्राम गुड़, दो सौ ग्रामशुद्ध घी, एक किलो गेहूँ का आटा लेकर आते हैं। इन सबको मिलाकर एक बड़े तावड़े में पापड़ी तैयार की जातीहै। गाँव की सभी नई बहूएं अपनी ननदों के साथ इसमें आती हैं एवं गाँव के सभी लोगों के पगे लगती (पाँव छूती) हैं। इन बहूओं को ग्रामीण आशीर्वाद देते हैं। इसमें मेहमान भी हिस्सा लेते हैं। सभी का आदर-सत्कार होता है।स्नेह सम्मेलन में गांव के बुजुर्ग, मुखिया या सरपंच आदि के ग्रामीणों को दीवाली की शुभकामनाएं देते हुए सुख-समृद्धि भरे वर्ष की कामना करते हैं और गांव की एकता, नशामुक्ति, दहेज निषेध, फिजूलखर्ची पर अंकुश, सामुदायिक सहभागिता और सर्वसम्मत विकास का संकल्प ग्रहण किया जाता है। इस दौरान गीत भी होते हैंइनमें 'पोर आ दाड़ा वेला आवजु, सब नी सुखी राखजु/ढाण्डी-सोपी, कुटूम्ब-परिवारी शांति रेजु/पोर आ दाड़ावेला आवजुङ्ग.की पंक्तियां दोहरायी जाती हैं। इसके बाद सभी लोगों को पापड़ी का प्रसाद दिया जाता है।पापड़ी खाकर कर राम-राम कहते हुए सभी अपने अपने घरों पर चले जाते हैं। घरों में गाय-बैल, भैंस एवं अन्यपशुओं के कडवे बांधकर रमजी की जाती है।

वागड़ में दीवाली आणे और मेरिया का उल्लास देखने लायक होता हैं। इनमें मेरिया पूरते वक्त गीत 'आजदीवाली काल दीवाली परम दाड़े भाई-भाभी ने घेर दीवाली मेरजू', हई रे काका खेखड़ी आवे घी नो दिवो लागतोआवे घी नो लाडू खाती आवे मेरजू, डूंगरपुर नो डूंगरो पूलो हगवाड़ा नो हागड़ो पूलो, वांहवारा नो वाड़ो पूलो, टामटिया नी तोड़ी ने वरदा नी ढाकणी मेरजू, घेर मय है पण बोलती नती, कपडं ही पण पेरती नती, तेल है पणपूरती नती आदि श्रृंगार गीत भी गायें जाते हैं। इस आयोजन में चारों ओर प्रकाश और आतिशबाजी के साथ हीघर और गांव का वातावरण हंसी-ठिठोली से चहकने लगता है।

वागड़ अंचल की दीवाली रस्में दाम्पत्य संबंधों की प्रगाढ़ता का संकेत तो देती ही हैं सामुदायिक सौहार्द के साथउत्सवी उल्लास का ज्वार भी उमेड़ती हैं।

बदलते समय के साथ कालान्तर में शहरों और देहातों में पर्वों को मनाने के पारंपरिक तरीकों में भी कई बदलावआए है , लेकिन वागड़ अंचल में दीपावली का त्यौहार मनाने की विशिष्ट और अनूठी परंपराएं और रवायतें आजभी कायम हैं, जो जगमग ज्योति पर्व को खास बना देती हैं। इस प्रकार डूंगरपुर और बांसवाड़ा जिलों में फैलेवागड़ क्षेत्र में दीपावली के पर्व पर दिवाली आणा (गौना) और मेरियू पुराने (विशेष प्रकार के मिट्टी से बने दीपकमें तेल पुरवाना) की विशिष्ट परंपरा है, जो वागड़ की दिवाली को देश के अन्य हिस्सों से अलग पहचान देती है।

हर दिन, हर घर आयुर्वेद का नारा तभी सार्थक होगा जब सभी प्रकृति को करेंगे अंगीकार

(पृष्ठ ›› 4 का शेष)

जब से मानव का जन्म हुआ है तब से रोग भी चले आ रहे हैं और तभी से आयुर्वेद भी चला आ रहा है इसलिएआयुर्वेद को अनादि कहा गया है।

ब्रह्मा से दक्षप्रजापति,दक्षप्रजापति से अश्विनी कुमार,अश्विनी कुमारों से इंद्र और इंद्र से भगवान धन्वंतरि नेआयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया।जब पृथ्वी पर रोग बढ़ने लगे तो मानव जाति को बचाने के लिए भगवान धन्वंतरिने अपने शिष्यों को ज्ञान दिया इसी क्रम से समय समय पर ज्ञान का हस्तांतरण होता रहा जो आज दिन तकचला आ रहा है।कालान्तर में हस्तांतरण का स्वरूप भले ही बदल गया है पर उद्देश्य एक ही है कि आयुर्वेदविज्ञान को घर घर पहुँचाना और लोगों को रोगमुक्त करना।

प्रकृति से उत्पन्न पुरूष का,प्रकृति से उत्पन्न वनस्पतियों,खनिज पदार्थों एवं जीव जंतुओं के माध्यम से मनुष्य कीआयु का संवर्धन करना एवं विभिन्न विधियाँ से जैसे औषधिय चिकित्सा , रसायन चिकित्सा, पंचकर्म,क्षार कर्म,अग्नि कर्म,शल्य कर्म इत्यादि विधियों से एवं मानसिक सौष्ठव पर संपूर्ण ध्यान केन्द्रित करते हुए रोगी कोरोगमुक्त करना ही आयुर्वेद चिकित्सा का मुख्य उद्देश्य है।

आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान किसी पहचान की मोहताज नहीं है।अब तो विदेशों में भी इसको अपनाने और जाननेमें खासी लालसा देखी गई है। आयुर्वेद प्राचीन काल से चली आ रही एक विश्वसनीय एवं निरापद चिकित्सापद्धति है।साथ ही अन्य चिकित्सा पद्धतियों का आधार स्त्रोत भी है। आयुर्वेद का भारतीय जीवन में हर क्षेत्र मेंइतना योगदान था कि उसका जीवन के साथ साथ, अर्थ व्यवस्था और सैन्य क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान था।आयुर्वेद केवल मानवीय स्वास्थ तक ही सीमित नहीं बल्कि आयुर्वेद में वृक्ष कृषि और बागवानी के लिए, अश्वआयुर्वेद सेना के लिए, पशु आयुर्वेद हॉर्टिकल्चर के क्षेत्र में आवश्यक एवम महत्वपूर्ण स्थान रखता आया है।इस वर्ष देश के विभिन्न हिस्सों में गायों में फैली लंपी वायरस का श्रेष्ठ उपचार आयुर्वेद में ही निहित रहा । भारत में इस वर्ष आयुर्वेद दिवस की थीम 'हर दिन,हर घर आयुर्वेद' रखी गई है।जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों कोआयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान की खूबियों से रूबरू कराना और किस तरह हम रोगों से बचाव एवं रोगों के उपचारमें आयुर्वेद अपना कर सुरक्षित रह सकते हैं,इस सन्देश को घर-घर पहुँचाना है। आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की तरह दुष्परिणाम बहुत कम होते हैं।प्रायः देखाजाता है कि बीमारी का एलोपेथी इलाज कराते समय दवा के साइड इफेक्ट होते हैं और उसके फलस्वरूपदूसरी बीमारियाँ भी उत्पन्न हो जाती है।हालाँकि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में हर दवा के साथ उसकेदुष्परिणाम भी लिखें होते हैं। आयुर्वेद में केवल रोग की चिकित्सा के साथ- साथ रोगी की प्रकृति के आधार पर चिकित्सा की जाती है।रोगके साथ रोगी को केन्द्र मानकर चिकित्सा की जाती है यानि उसकी प्रकृति, अग्निबल,मनोदशा इत्यादि को ध्यानमें रखकर चिकित्सा की जाती है।

हम अपने दैनिक जीवन में जो चीजें इस्तेमाल करते हैं चाहे वो रसोई के मसालें हों, फल,फूल,कंद मूल,शाकसब्ज़ियाँ हों,खेतों में उगनी वाली फसलें हों या प्रकृति की गोद में उगने वाली अन्य वनस्पतियाँ हों आयुवेर्दीयऔषधियों में उनका प्रयोग ही किया जाता हैं,इसलिए उनके दुष्परिणामों की संभावनाएं भी बहुत कम रहती है।कृत्रिम चीजें इंसानों के द्वारा बनाई जाती हैं उसमें गलती होने की संभावना ज्यादा होती है परंतु प्राकृत चीजों मेंमिलावट नहीं होती इसलिए छोटी मोटी ऋतुजन्य बीमारियों के लिए भी हम घर पर ही आयुर्वेद अपना कर ठीकहो सकते है। हम एंटीबायोटिक को खाते रहते हैं लेकिन उससे होने वाले नुकसान से अनभिज्ञ रहते हैं।कुछबीमारियाँ तो बिना चिकित्सा के भी समय के साथ खत्म हो जाती हैं लेकिन इंसानों में धैर्य की कमी होती है औरवह बिना जरूरत के भी एंटीबायोटिक खाकर अपना नुकसान करते रहते हैं।उदाहरण के तौर पर जुकाम एकबहुत सामान्य बीमारी है जो तीन से पाँच दिनों में थोड़ा बहुत परहेज जैसे गर्म पानी पीने से,सोंठ मिर्च लौंगकालीमिर्च को शहद से लेने से या केवल तुलसी और अदरक की चाय पीने से भी ठीक हो जायेगा लेकिन लोगथोड़े प्रयास करने की जगह ऐलोपेथी गोलियाँ खाना ज्यादा आसान समझते हैं और बेवजह दवा लेना शुरू करदेते हैं।

आज के समय की सबसे बड़ी जरुरत आयुर्वेद बनती जा रही है जिसे अब पूरी दुनिया अंगीकार करने लगी है।कोरोना महामारी के भीषण काल में भी लोगों ने इसका लोहा माना है।विदेशों तक लोगों में इसका खासा प्रभावदेखा गया है। इसलिए आओ हम सब मिलकर अपने आस पास होने वाली वनस्पतियों को जाने,उनके संवर्द्धन मेंअपना योगदान दें,उनका संरक्षण करें आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को अपनायें और आम जन को इस सबसेप्राचीन और सुरक्षित चिकित्सा पद्धति को अपनाने के लिए प्रेरित करें। आयुर्वेद का भारतीय जीवन में हर क्षेत्र मेंइतना योगदान था कि उसका जीवन के साथ साथ, अर्थ व्यवस्था और सैन्य क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान था।

हर दिन हर घर आयुर्वेद अपनाएँ
सुखी और निरापद स्वास्थ्य पायें।

लेखक डॉ मनजीत कौर, बीकानेर हॉउस नई दिल्ली में राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय की प्रभारी वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी है

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
8
वर्ष : 01, अंक : 05, नई दिल्ली, बुधवार, 26 अक्टूबर, 2022

भारत ने श्रीलंका को एकतरफा फाइनल में 8 विकेट से हरा सातवीं बार जीता महिला क्रिकेट एशिया कप

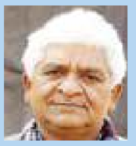

सत्येन्द्र पाल सिंह

नौजवान तेज गेंदबाज रेणुका सिंह की कहर बरपाने वाली गेंदबाजी के साथ बेहद चुस्त फील्डिंग तथा ओपनर स्मृति मंधाना के तूफानी अविजित अर्द्धशतक की बदौलत भारत ने श्रीलंका को एसीसी महिला टी-20 एशिया कप क्रिकेट टूनार्मेंट के बेहद एकतरफा फाइनल में सिलहट(बांग्लादेश) में शनिवार को आठ विकेट से हराकर सातवीं बार खिताब जीत लिया। भारत ने श्रीलंका को पांचवीं बार फाइनल में शिकस्त दी।

भारत अकेली ऐसी टीम है जो कि अब तक हुए सभी आठों एशिया कप के संस्करणों के फाइनल में पहुंची और मात्र एक बार पिछले यानी 2018 में क्वालालंपुर में हरमनप्रीत कौर की कप्तानी अंतिम गेंद पर हार को छोड़ कर बाकी सभी सातों संस्करण में चैंपियन बनने में कामयाब रही। कप्तान हरमनप्रीत कौर के लिए यह खिताबी जीत इसलिए खास है कि वह अंततः उनका भारत को महिला एशिया कप जिताने का सपना शनिवार को आखिर साकार हो गया।

श्रीलंका ने पाकिस्तान के खिलाफ सेमीफाइनल में मात्र एक रन से जीत में गजब क जीवट दिखाया था। भारत के खिलाफ फाइनल में इसके ठीक उलट श्रीलंका की बल्लेबाजी ताश के पत्तों की तरह ढह गई।

मैच की सर्वश्रेष्ठद खिलाड़ी तेज गेदबाज रेणुका सिंह(3/3) के नई गेंद से बरपाए कहर के बाद लेफ्ट आर्म स्पिनर राजेश्वरी गायकवाड़ (2/16) और ऑफ स्पिनर स्नेह राणा(2/13) के बुने स्पिन के जाल की बदौलत भारत ने टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी करने उतरी श्रीलंका को 20 ओवर में नौ विकेट पर मात्र 65 रन पर रोक दिया। इनोका रणवीरा (नॉटआउट 18 रन, 22 गेंद, दो चौके) और ओशादी रणसिंहे (13) ही श्रीलंका की दो ऐसी बल्लेबाज रही जो कि दहाई के अंक तक पहुंच पाई। इनोका और अचिनी कुलसूर्या (नॉटआउट 6) ने आखिरी विकेट श्रीलंका के लिए 22 रन की असमाप्त और पारी की सबसे बड़ी भागीदारी की। श्रीलंका की बाकी बल्लेबाजों का स्कोर टेलीफोन नंबर डायल की तरह रहा। श्रीलंका की पूरी पारी में मात्र चार चौके लगे और इनमें से दो इनोका और कप्तान चामरी अट्टद्दापट्टद्दू और नीलाक्षी डिसिल्वा ने एक लगाया। श्रीलंका को बस यह संतोष हो सकता है भारत उसकी पूरी टीम को आउट नहीं कर पाया।

जवाब में ओपनर स्मृति मंधाना की मात्र 25 गेंद पर तीन छक्कों और पांच चौकों की मदद से नॉटआउट 51 रन की तूफानी पारी की बदौलत भारत ने मात्र 8.3 ओवर में दो विकेट खोकर 71 रन बना फाइनल जीत लिया। स्मृति ने श्रीलंका की ऑफ स्पिनर ओशादी रणसिंहे के तीसरे ओवर की तीसरे गेंद को वाइड लॉग्ग ऑन के उपर से उड़ा अपनी पारी का तीसरा छक्का जड़ जोरदार अंदाज में भारत को जीत दिलाई।

उपकप्तान स्मृति के साथ कप्तान हरमनप्रीत कौर एक चौके की मदद से 14 गेंद खेल कर 11 रन बनाकर अविजित रही। भारत ने छह ओवर के पहले पॉवरप्ले में शुरू के ओपनर शैफाली वर्मा (5) और जेमिमा रॉड्रिग्ज (2) के विकेट खोकर 42 रन बनाए थे।

शैफाली वर्मा बेवजह ऑफ स्पिनर इनोका रणवीरा की गेंद को उड़ाने के फेर में फ्लाइट से मात खा गई और विकेटकीपर अनुष्का संजीवनी ने उन्हें स्टंप आउट किया। भारत ने शैफाली के रूप में पहला विकेट चौथे आोवर में 32 रन पर खोया और टीम के स्कोर में तीन रन ही ओर जुड़े थे कि अगले ओवर में ऑफ स्पिनर कविषा दिलहारी की नीची रहती गेंद को ड्राइव करने के प्रयास में जेमिमा रॉड्रिग्ज बोल्ड हो गई।भारत ने छह ओवर के पहले पॉवरप्ले में दो विकेट खोकर 42 रन बनाए थे।

भारत की रेणुका सिंह ने गेंद से धार व रफ्तार दिखा अपने शुरू के तीन ओवरों में तीन विकेट चटकाने के साथ बेहतरीन फीिल्डंग का नमूना पेश कर कप्तान ओपनर चामरी अट्टद्दापट्टद्दू(6) को आउट कर श्रीलंका की पारी को बिखेरने का सिलसिला शुरू किया। भारत ने पहले पॉवरप्ले में शुरू के छह ओवर में ही 15 रन पर श्रीलंका की पांच बल्लेबाजों को आउट कर पैवेलियन लौटा दिया। रेणुका ने अपने दूसरे ओवर की तीसरी गेंद पर टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा रन बनाने में दूसरे स्थान पर रही हर्षिता मादवी विक्रमसिंहे (1) को ऑफ स्टंप के बाहर मूव होती गेंद पर विकेटकीपर ऋचा घोष के हाथों कैच कराया। उनकी अगली गेंद पर दूसरी ओपनर अनुष्का (1) को पूजा वस्त्रकर ने सीधे थ्रो से रनआउट किया। रेणुका ने पांचवी गेंद पर हसिनी परेरा (0) को स्मृति मंधाना के हाथों कैच कराया और श्रीलंका ने 3.5 ओवर में मात्र 9 पर चार विकेट गंवा दिए थे। रेणुका ने अपने तीसरे ओवर की दूसरी गेंद पर कविषा दिलहारी(1) को बोल्ड कर दिया और श्रीलंका की आधी टीम मात्र 16 रन पर पैवेलियन लौटने के बाद उसके विकेट गिरने का सिलसिला नहीं थमा।

रेणुका के कहर बरपाने के बाद भारत की स्पिनरों ने मोर्चा संभाला और लेफ्ट आर्म स्पिनर राजेश्वरी गायकवाड़ ने नीलाक्षी डिसिल्वा (6) को बोल्ड किया। ऑफ स्पिनर स्नेह राणा ने अपनी चौथी ही गेंद पर मालशा शिहानी(0) को ड्राइव के लिए मजबूर कर कैच कर पैवेलियन लौटाया और राजेश्वरी गायकवाड़ ने अपने चौथे व आखिरी ओवर की अंतिम पूर्व गेंद पर ओशादी रणसिंहे (13) को आउट कर अपना दूसरा व आखिरी विकेट लिया और श्रीलंका ने 11.5 ओवर में आठ विकेट 32 रन पर खो दिए थे। स्नेह राणा ने सुगंधिका कुमारी (6) को बोल्ड कर अपना दूसरा विकेट लिया और श्रीलंका ने नौवां विकेट 16वें ओवर में 43 रन पर खो दिया था।

भारत की जीत में रेणुका का कहर, स्मृति का तूफानी अर्द्धशतक

भारत की स्नेह और राजेश्वरी के बुने स्पिन के जाल में फंसा श्रीलंका

'हमारी इस खिताबी जीत का श्रेय हमारी गेंदबाजों को'

'हमारी इस खिताबी जीत का श्रेय हमारी गेंदबाजों को है। हमारे लिए हर गेंद अहम थी। हमारी टीम की फाइनल में जीत में सभी ने योगदान किया। पिच को पढ़ने पर जब देखा की गेंद घूम रही थी मुझे सही जगह सही क्षेत्ररक्षक तैनात करने की जरूरत थी। हमने स्कोरबोर्ड की ओर नहीं देखा। हमने अपनी योजना की मुताबिक काम किया।

-हरमनप्रीत कौर, भारत की कप्तान

'हमारी टीम ने पहले मैच से फाइनल तक बेहतरीन प्रदर्शन किया'

'मैं बहुत खश हूं कि हमारी भारतीय महिला टीम ने पहले से फाइनल तक बेहतरीन प्रदर्शन किया। मैंने अपनी ताकत पर भरोसा किया। धीमी पिच थी और गेंद खासी घूम रही थी। मैंने इस टूनार्मेंट से पहले अपनी बल्लेबाजी पर काफी मेहनत की। मैंने अपनी बल्लेबाजी पर खासी मेहनत की थी। यह टूनार्मेंट जीतने का लाभ हमें बेशक अगले सीरीज में मिलेगा।

-दीप्ति शर्मा, टूनार्मेंट की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी (कुल 13 विकेट, कुल 94 रन)

'मैंने अपनी बेसिक्स पर ज्यादा ध्यान दिया'

'पिछले कई मैचों मैंने अचछी गेंदबाजी नहीं की। मैंने फाइनल से पहले कोच, कप्तान और सपोर्ट स्टाफ के साथ इस बाबत चर्चा कर अपनी गेंदबाजी पर काफी मेहनत की। बेशक पिच स्पिनरों के लिए ज्यादा मुफीद थी, लेकिन मैंने अपनी बेसिक्स पर ज्यादा ध्यान दिया।'

- रेणुका सिंह, मैच की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी

रक्षा क्षेत्र का विस्तार

पिछले कुछ वर्षों में हुए नीतिगत बदलावों तथा सरकारी संरक्षण के कारण हमारे देश में रक्षा उद्योग लगातार बढ़ता जा रहा है। इससे न केवल आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण सहयोग मिल रहा है, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा भी मजबूत हो रही है। क्षेत्र के विकास की अंतहीन संभावनाओं को रेखांकित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उचित ही कहा है कि पश्चिमी सीमा पर किसी शरारत का जवाब देने में भारत अब अधिक सक्षम है।

रक्षा प्रदर्शनी के बारहवें संस्करण के उद्घाटन के अवसर पर उन्होंने जानकारी दी कि बीते पांच वर्षों में भारतीय रक्षा उद्योग आठ गुना बढ़ा है तथा हम 75 से अधिक देशों को साजो-सामान निर्यात कर रहे हैं। यह उपलब्धि इसलिए विशिष्ट हो जाती है कि भारत आठ साल पहले हथियारों और अन्य वस्तुओं का सबसे बड़ा आयातक था। रक्षा क्षेत्र का विकास आत्मनिर्भर भारत के संकल्प तथा मेक इन इंडिया अभियान का महत्वपूर्ण पहलू है।

पिछले वित्त वर्ष में 13 हजार करोड़ रुपये मूल्य के रक्षा साजो-सामान निर्यात हुए हैं और आगामी कुछ वर्षों में इस आंकड़े को 40 हजार करोड़ रुपये करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। आयात में कमी आने से जहां एक ओर विदेशी मुद्रा की बचत हो रही है, वहीं रक्षा आवश्यकताओं की पूर्ति में वैश्विक स्तर पर जारी भू-राजनीतिक हलचलें भी कम बाधा बन रही हैं। आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करने के लिए सरकार ने कई वस्तुओं के आयात को प्रतिबंधित कर दिया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने बताया है कि जल्दी ही 101 और वस्तुओं की सूची जारी होगी। इसके साथ भारत में बनने वाली चीजों की संख्या 411 तक पहुंच जायेगी। रक्षा क्षेत्र में निजी क्षेत्र के भी आ जाने से निवेश और अनुसंधान के लिए भी राहें खुल रही हैं। देश में निर्मित वस्तुओं को हमारी सेनाएं तो इस्तेमाल कर ही रही हैं, उनके निर्यात से भारत की वैश्विक साख तथा सामरिक प्रभाव में भी बढ़ोतरी हो रही है।

जैसा कि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा है, रक्षा प्रदर्शनी इस संबंध में भारत के ठोस संकल्प को इंगित करती है। अब तक के रुझान स्पष्ट संकेत करते हैं कि भारत को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में बड़ी भागीदारी हासिल करने में रक्षा उद्योग बड़ी भूमिका अदा कर सकता है। सरकार का लक्ष्य अगले 25 वर्षों में देश को रक्षा निर्माण में एक बड़ी शक्ति बनाना है। स्वतंत्रता प्राप्ति के 75 वर्ष पूरे होने से लेकर सौ वर्ष पूरे होने की अवधि को अमृत काल की संज्ञा दी गयी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति के साथ रक्षा क्षेत्र के उल्लेखनीय विकास का आह्वान किया है।

हिन्दी का राष्ट्रीय राजनैतिक साप्ताहिक
राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
प्रचार है तो व्यापार है
देश के लोकप्रिय हिंदी अखबार
'राजनीतिक तरकस'
मे विज्ञापन दें और अपना
व्यवसाय बढ़ाएं

प्रधान संपादक
जितेंद्र तिवारी
प्रबंध संपादक
राजेश तिवारी
Email:tarkasnews@gmail.com Mob:9990170069
Website: www.rajneetiktarkas.in